नई सोच, नया आयाम

RNI No. CHHHIN/2009/35020

जोहार छत्तीसगढ़

दैनिक हिन्दी

◆ वर्ष: -14 ◆ अंक: 250 डाक पंजीयन 030/रायगढ़/2015-2017 ◆ मूल्य: 3 ₹ ◆ पृष्ठ : 8 (4+4)

धरमजयगढ़, मंगलवार 19 जुलाई 2022

पेज -3 पर

जिले में बच्चों की भाषाई एवं गणितीय दक्षता विकास हेतु...

ज्ञानोदय कॉलेज ऑफ एजुकेशन में वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान चलाया गया

पेज -8 पर

JOHAR CHHATTISGARH epaper for login www.joharchhattisgarh.in

राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान खत्म, सभी 90 विधायकों ने डाले वोट

सबसे पहले बीजेपी विधायक अजय चंद्राकर, आखिरी में कांग्रेस एमएलए ने किया मतदान

रायपुर । देश के 16वें राष्ट्रपति के चुनाव के लिए सोमवार सुबह 10 बजे से शुरू हुआ मतदान खत्म हो गया है। छत्तीसगढ़ के सभी 90 विधायकों ने वोट डाले। सबसे पहले BJP विधायक अजय चंद्राकर ने मतदान किया तो सबसे अंत में कांग्रेस विधायक द्वारिकाधीश यादव का वोट पड़ा।

कांग्रेस की ओर से सबसे पहले PCC चीफ मोहन मरकाम ने मतदान किया था। शाम 5 बजे मतपेटी को सील किया जाएगा। इसके बाद फ्लाइट से निर्वाचन अधिकारियों की एक टीम मतपेटी और दूसरे दस्तावेज लेकर दिल्ली जाएंगी। वहां मतपेटी को राज्यसभा सचिवालय के स्ट्रांग रूम में रखा

जाएगा। 21 जुलाई को मतगणना होनी है। सुबह सबसे पहले राष्ट्रपति चुनाव के लिए आई मतपेटी को विधानसभा के समिति कक्ष-2 में बने मतदान केंद्र में पहुंचाई गई। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी पी. दयानंद की मौजूदगी में निर्वाचन अधिकारियों ने सुबह स्ट्रांग रूम से मतपेटी को पूरी सुरक्षा में निकालकर मतदान केंद्र में पहुंचाया। इस दौरान सत्ता पक्ष के विधायक मोहित केरकेट्टा और

विपक्ष के विधायक डॉ. कृष्ण मूर्ति बांधी भी उम्मीदवारों के एजेंट के तौर पर मौजूद रहे। दोनों विधायकों को पहले मत पेटी को बक्से से निकाल कर खाली होने को पुष्टि के लिए दिखाया गया। इसके बाद

निर्वाचन अधिकारियों ने मतपेटी को टैग और फ्लैग लगा कर सील किया। इस्तीफा देने के बाद पहली बार स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव भी सामने आए। वह भी मतदान के लिए पहुंचे। उनके साथ विधायक छन्नी साहू और शैलेष पांडेय भी थे। विधानसभा में सिंहदेव को देखते ही विधायक कुलदीप जुनेजा उनके पास गए और फिर मतदान कराया। इससे पहले स्पीकर डाक्टर चरणदास महंत और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सहित कई विधायक मतदान कर चुके थे। नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक ने कहा कि उम्मीद है कि भाजपा प्रत्याशी द्रौपदी मुर्मू को छत्तीसगढ़ से रिकार्ड वोट मिलेंगे।

छत्तीसगढ़ में चार रुपए लीटर गौमूत्र खरीदेगी सरकार

28 जुलाई से शुरू होगी खरीदी, अभी हर जिले के दो गौठानों में ही व्यवस्था

रायपुर। छत्तीसगढ़ में दो रुपए प्रति किलोग्राम गोबर खरीदी के बाद गौमूत्र खरीदी भी शुरू होने जा रही है। सरकार ने इसके लिए कम से कम चार रुपए प्रति लीटर की दर तय की है। गौठान प्रबंध समिति गौमूत्र खरीदी की दर स्थानीय स्तर पर भी तय कर सकती हैं। इसकी शुरुआत हरेली तिहार यानी 28 जुलाई से हो रही है। पहले चरण में प्रत्येक जिले के दो चयनित स्वावलंबी गौठानों में गौमूत्र की खरीदी की जाएगी।

गोधन न्याय मिशन के प्रबंध संचालक डॉ. अय्याज तम्बोली ने सभी कलेक्टरों को गौठानों में गौमूत्र की खरीदी को लेकर सभी आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित करने को कहा है। उन्होंने कहा है कि गौमूत्र की खरीदी गौठान प्रबंधन समिति के खाते में उपलब्ध गोधन

न्याय योजना से मिली राशि और उसकी ब्याज राशि से करेगी। उन्होंने कलेक्टरों को अपने-अपने जिले के दो स्वावलंबी गौठानों, स्व-सहायता समूह का चयन करने, गौठान प्रबंध समिति तथा स्व-सहायता समूह के सदस्यों को प्रशिक्षण देने के साथ ही गौ-मूत्र परीक्षण संबंधी किट एवं उत्पाद भण्डारण हेतु आवश्यक व्यवस्था करने को कहा है।

कलेक्टरों को चयनित गौठान एवं स्व-सहायता समूह की सूची शीघ्र उपलब्ध कराने को कहा गया है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इसी साल अप्रैल-मई में गौमूत्र खरीदी की घोषणा की थी। उसके बाद कृषि विभाग ने कामधेनु विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय से गौमूत्र के वैल्यू एडिशन पर एक अध्ययन कराया।

एक नजर

101 किलो दूध से भगवान शंकर का रुद्राभिषेक

भिलाई। सावन के पहले सोमवार में दुर्ग व भिलाई शहर के लगभग सभी शिव मंदिर भक्तों से खचाखच भरे रहे। भिलाई नगर निगम के सभी भाजपा पार्षदों ने 101 किलो दूध से भगवान शंकर का रुद्राभिषेक कर भंडारा किया। वहीं भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव ने कई शिवमंदिर में जाकर भगवान शंकर की पूजा की और भिलाई वासियों की खुशहाली की कामना की।

सावन के पहले सोमवार पर पावर हाउस स्थित राजराजेश्वरी मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए सुबह से ही भक्तों का रेला लगा रहा। यहां रुद्राभाहाभिषेक का आयोजन किया गया था। नगर पालिक निगम भिलाई के भाजपा पार्षद दया सिंह अपने सभी पार्षद साथियों के साथ वहां पहुंचे और पूजा में हिस्सा लिया। बोल बम सेवा एवं कल्याण समिति के अध्यक्ष व पार्षद दया सिंह सहित सभी भाजपा पार्षदों ने मिलकर 101 किलो दूध, दही, घी से भगवान का महाभिषेक किया। इसके बाद प्रसाद के रूप में 101 किलो लड्डू का भोग लगाकर लोगों को प्रसाद वितरित किया गया।

सिंहदेव के खिलाफ एक्शन के लिए पत्र

विधायक दल की बैठक में 14 मंत्रियों-विधायकों ने बाबा के पत्र को अनुशासनहीनता बताया, 61 विधायकों का हस्ताक्षर

रायपुर। स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव के इस्तीफे वाली चिट्ठी पर कांग्रेस में बवाल मचा हुआ है। मुख्यमंत्री निवास में हुई विधायक दल की बैठक में 14 मंत्रियों-विधायकों ने सिंहदेव के पत्र में लगाए गए आरोपों पर आपत्ति जताई। पत्र को अनुशासनहीनता कहा गया। सिंहदेव के खिलाफ कार्यवाई की मांग वाले एक पत्र पर भी 61 विधायकों के हस्ताक्षर लिए गए हैं। इसे लेकर प्रदेश प्रभारी पीएल पुनिया दिल्ली जाएंगे।

मुख्यमंत्री निवास में रविवार रात कांग्रेस विधायक दल की बैठक राष्ट्रपति चुनाव के मतदान का प्रशिक्षण देने के सिंगल एजेंडे पर आयोजित थी। बैठक शुरू हुई तो नगरीय प्रशासन मंत्री डॉ. शिव

डहरिया ने टीएस सिंहदेव के इस्तीफे का मामला उठा दिया। डहरिया ने कहा, यह सरकार को अपमानित करने वाली स्थिति है। सरकार अच्छा काम कर रही है। इसके बावजूद ऐसा लिखा जा रहा है, यह बेहद आपत्तिजनक है। राजिम विधायक अमितेश शुक्ला ने कहा, उनके बाप-दादा के जमाने में भी कभी ऐसा नहीं हुआ। यह ठीक नहीं हो रहा है। भिलाई विधायक देवेंद्र यादव ने यहां तक कह दिया कि यह सरासर अनुशासनहीनता का मामला है।

राजधानी में नग्न होकर प्रदर्शन, 12 हिरासत में

रायपुर। सोमवार की दोपहर रायपुर की सड़क पर अजीब हालात देखने को मिले। अंबेडकर चौक के पास रायपुर की पुलिस कुछ लड़कों से धक्का-मुक्की करती दिखी। लड़कों के शरीर पर कपड़े नहीं थे वो नारेबाजी कर रहे थे। इन लड़कों के तन को स्कार्फ से ढंककर पुलिस इन्हें जबरन पेट्रोलिंग वाहन में बैठा रही थी। नग्न अवस्था में ये लड़के पुलिस की इस कार्रवाई का विरोध कर रहे थे।

पता चला कि ये लड़के अनुसूचित जाति समाज से ताल्लुक रखते हैं। ये युवक प्रदेश में अनुसूचित जाति वर्ग पर अत्याचार का दावा करते हुए इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। युवकों ने कहा कि लगातार रायपुर, बिलासपुर समेत प्रदेश के कई इलाकों में कहीं अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों के साथ मारपीट हो रही है, कहीं हत्या तो कहीं उनकी जमीनों पर कब्जा किया जा रहा है। मगर जिम्मेदार इनकी नहीं सुन रहे, इन्हें न्याय नहीं मिल रहा, इसलिए ये विरोध प्रदर्शन किया गया। इधर, बिलासपुर से भी कुछ लोग यहां प्रदर्शन में शामिल होने आ रहे थे। मगर उन्हें पुलिस ने पहले ही रोक लिया। इसके खिलाफ युवकों ने जमकर नारेबाज भी की।

इस नग्न विरोध प्रदर्शन से जुड़े युवक महेंद्र सिंह खांडे ने बताया कि लगातार अनुसूचित जाति वर्ग अपनी शिकायतें पुलिस और जिला प्रशासन के अफसरों के पास लेकर पहुंचता है। मगर कोई कार्रवाई नहीं होती। इसी वजह से रायपुर के अंबेडकर चौक पर आकर युवकों ने ये प्रदर्शन किया है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए हमारे 12 साथियों को हिरासत में लिया है। सुबह से मुझे भी हिरासत में लिया गया था बाद में छोड़ा गया। सभी साथी बिलासपुर से रायपुर इस विरोध प्रदर्शन में शामिल होने पहुंचे थे।

तेंदुआ खाल के साथ दो तस्कर गिफ्तार

गरियाबंद । पुलिस अधीक्षक जेआर. ठाकुर एवं अति पुलिस अधीक्षक गरियाबंद चन्द्रेश सिंह ठाकुर के निर्देशन तथा अनुविभागीय अधिकारी पुलिस गरियाबंद पुष्पेन्द्र नायक एवं उप पुलिस अधीक्षक निशा सिन्हा के पर्यवेक्षण में समस्त थाना प्रभारिओं को अपने अपने थाना क्षेत्रों में अवैध गांजा , हिरा,शराब,जुआ,सट्टा एवं वन्य जीव के मामले में कार्यवाही हेतु निर्देश दिया गया था।जिसके परिपालन में थाना छुरा को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि दो व्यक्ति ग्राम राजपुर से खरखरा की ओर अपने मोटर सायकल में तेंदुआ खाल बोरी में भरकर बिक्री करने आ रहे है कि सूचना पर थाना प्रभारी छुरा द्वारा तत्परता पूर्वक वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना दिया गया ।

शिवनाथ नदी में कार सहित 5 लोग डूबे

दुर्ग में हादसा या खुदकुशी, 10 घंटे से तलाश जारी, पहुंची एनडीआरएफ की टीम

दुर्ग। छत्तीसगढ़ के दुर्ग में देर रात एक इनोवा कार शिवनाथ नदी में समा गई। कार में 5 लोग सवार बताए जा रहे हैं। अभी तक न कार का पता चल सका है और न उसमें सवार लोगों का।

सूचना मिलने पर पुलिस और SDRF की टीम सुबह 6 बजे से नदी में सर्चिंग कर रही है। रायपुर से NDRF की टीम दुर्ग पहुंच चुकी है। मंगलवार सुबह से फिर

सर्चिंग शुरू की जाएगी। हालांकि परिस्थितियों को देखते हुए हादसा है या सामूहिक आत्महत्या अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। स्थानीय मछुआरा श्याम कुमार ढीमर ने भास्कर को बताया कि रात 11 बजे उसके घर में नाग सांप निकला था। मोहल्ले के लोगों की मदद से सांप को पकड़कर वह उसे जंगल में छोड़ने गया था। वहां से आधे घंटे बाद लौटकर वह घर पहुंचा ही था कि नदी में कुछ गिरने की तेज आवाज आई। वह दौड़कर नदी के पास पहुंचा तो देखा कि कोई कार नदी में बह रही है और उसके इंडिकेटर की लाइट जल रही थी। देखते ही देखते कार नदी में डूब गई। श्याम कुछ लोगों के साथ टार्च लेकर मौके पर पहुंचा और आवाज लगाया। जब किसी की कोई आवाज नहीं आई तो उसने तुरंत डायल 112 पर फोन किया और घटना की सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलने के कुछ देर बाद ही पुलिस मौके पर पहुंची। इसके बाद एसडीआरएफ की टीम को बुलाया गया। एसडीआरएफ के कमांडेंट्स नागेंद्र कुमार सिंह खुद सर्चिंग टीम की कमान संभाले हुए हैं। हादसा संकरे पुल में गाड़ी मोड़ने की वजह से हुआ है। दरअसल नदी के उस पार दुर्ग की तरफ ठाकुर पान ठेला व होटल है।

हाईकोर्ट को मिलेंगे 2 नए जज

बेंच और बार कोटे से एक-एक जज की मंजूरी, पहली दफा बार एसोसिएशन के पूर्व पदाधिकारी को मौका

बिलासपुर। सुप्रीम कोर्ट ने छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट में दो नए जज की नियुक्ति के लिए हरी झंडी दे दी है। इसमें बार कोटे से एक और बेंच कोटे से एक नाम पर मुहर लगाई है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस ने नियुक्ति के लिए राष्ट्रपति से अनुशंसा की है। खास बात ये है कि ऐसा पहली बार हुआ है, जब बार एसोसिएशन के किसी पूर्व पदाधिकारी को जज बनने का मौका मिला है। इससे पहले जस्टिस प्रशांत मिश्रा स्टेट बार काउंसिल के चेयरमेन रहते हुए जज बने थे। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस ने बार और बेंच कोटे से अधिवक्ताओं के साथ ही

ज्यूडिशियल ऑफिसर के नाम जज की नियुक्ति के लिए भेजे थे। हालांकि, अभी यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि उन्होंने कितने वकील और ज्यूडिशियल ऑफिसर की अनुशंसा की थी। सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई समेत तीन वरिष्ठ जस्टिस के कॉलेजियम ने हाईकोर्ट से भेजे गए सात नाम में से चार की नियुक्ति की अनुशंसा की है।

कार्यक्रम... मुख्यमंत्री ने कहा - हम भारत वर्ष की परम्पराओं का निर्वहन करने वाले लोग हैं

नया छत्तीसगढ़ का मॉडल लोगों को आर्थिक समृद्धि देने का मॉडल है -मुख्यमंत्री

रायपुर। 'हमने छत्तीसगढ़ में जो मॉडल लाया वो लोगों की जेब में पैसा डालने वाला मॉडल है। हमने किसानों, मज़दूरों, ग़रीबों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का काम किया। हमने लोगों को अधिकार सम्पन्न बनाने का काम किया है।

नया छत्तीसगढ़ का मॉडल लोगों को आर्थिक समृद्धि देने का मॉडल है।' यह विचार आज मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने न्यूज-18 के कार्यक्रम राइजिंग छत्तीसगढ़ में व्यक्त किए।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने नन्हीं कलाकार आरू साहू के साथ सुर में मिलाए सुर

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री बघेल से परिचर्चा के दौरान छत्तीसगढ़ के विकास मॉडल से लेकर उनके व्यक्तिगत जीवन तक के अनेक सवाल पूछे गए, जिनका मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने बेबाकी से जवाब दिया। परिचर्चा की शुरुआत में बदलते छत्तीसगढ़ की तस्वीर पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई।

कार्यक्रम राइजिंग छत्तीसगढ़ के दौरान गढ़त हे नवा छत्तीसगढ़ सत्र के दौरान मुख्यमंत्री श्री बघेल से परिचर्चा में सवालों की शुरुआत नया छत्तीसगढ़ मॉडल को लेकर हुई। इस पर मुख्यमंत्री ने बताया कि किसानों को उनकी उपज की सही कीमत देना, मजदूरों के लिए कोरोना काल में भी मनरेगा जैसा कार्य जारी रखना, गरीबों और आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लिए भूमिहीन ग्रामीण कृषि मजदूर योजना की शुरुआत कर इन सभी तबकों के जेब में पैसे डालने का काम वर्तमान राज्य सरकार ने किया है। इसके अलावा भी अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं के जरिए छत्तीसगढ़वासियों को अधिकार सम्पन्न बनाने का काम राज्य सरकार ने किया है।

सिंहदेव विवाद पर विपक्ष का तंज

मैं झुकेगा नहीं साला... जैसे हालात छत्तीसगढ़ में, अजय चंद्राकर ने पुनिया के लिए किया ट्विट

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मंत्री टीएस सिंहदेव के इस्तीफे के बाद अब विपक्ष कांग्रेस पर तंज कस रहा है। सोशल मीडिया पर भी इस मसले की खूब चर्चा हो रही है। पूर्व मंत्री और भाजपा के विधायक ने प्रदेश के सियासी हाल पर तंज कसते हुए एक ट्विट किया है। इस पर कई लोग फनी रिएक्शन दे रहे हैं। अजय चंद्राकर ने लिखा - मैं झुकेगा नहीं साला पुष्पा..... (फिल्म-पुष्पा..... संदर्भ- छत्तीसगढ़ कांग्रेस शोषित की वर्तमान राजनीति) पीएल पुनिया हाईकमान को अवगत करा दीजिएगा। दरअसल अजय चंद्राकर ने पुनिया से अपील की है कि वो यहां की परिस्थितियों के

बारे में हाईकमान यानी कि सोनिया गांधी को बताएं। सिंहदेव ने पंचायत विभाग से ही इस्तीफा दिया है। भाजपा के नेता उन्हें हर विभाग से इस्तीफा देने को भी कह रहे हैं। इस्तीफे में सिंहदेव ने पंचायत विभाग में काम की आजादी न होने, घोषणा पत्र के वादे पूरे न होने जैसी बातें लिख दीं। अगले दिन मुख्यमंत्री बघेल ने कह दिया इस्तीफा मिला ही नहीं। शाम को कांग्रेस विधायक दल की बैठक में सिंहदेव नहीं गए। कांग्रेस के विधायकों ने अब उनकी शिकायत कांग्रेस हाईकमान से की है। पुनिया ने सिंहदेव से बात की, मगर हल नहीं निकला। सिंहदेव दिल्ली के रवाना हो चुके हैं।

मानसून सत्र में मुद्दे, 24 विधेयक होंगे पेश

संसद का मानसून सत्र आज से शुरू हो रहा है, जो आगामी 12 अगस्त तक चलेगा। मानसून सत्र में केंद्र सरकार 24 विधेयक पेश करने वाली है। इसमें वन संरक्षण संशोधन विधेयक, ऊर्जा संरक्षण संशोधन विधेयक, परिवार अदालत संशोधन विधेयक, राष्ट्रीय रेल परिवहन संस्थान को गतिशक्ति विश्वविद्यालय में परिवर्तित करने संबंधी विधेयक शामिल हैं। इसके अलावा, सरकार चार ऐसे विधेयक भी पेश करेगी, जिस पर संसद की स्थायी समितियों ने विचार किया है। जबकि विपक्ष की योजना है कि सरकार को जवाबदेह बनाया जाए और मुद्दों पर बहस हो।

पिछले कुछ सत्रों से देखा जा रहा है कि विपक्ष के हंगामे के कारण सरकार बिना बहस के विधेयकों को पारित करवा लेती है। संसद की कार्यवाही स्थगित होने से सरकार को ही फायदा मिलता है। इस मानसून सत्र में कई ऐसे मुद्दे हैं, जिन्हें विपक्ष संसद में उठाना चाहेगा, जिनमें खाद्य पदार्थों की महंगाई, ईंधन की कीमतों में वृद्धि, अग्निपथ योजना, चीन के साथ गतिरोध का मुद्दा, पहली बार देश में डिजिटल मीडिया को विनियमित करने के लिए लाए जाने वाले नए कानून आदि शामिल होंगे। पिछले बजट सत्र के दौरान लोकसभा में 129 फीसदी और राज्यसभा में 98 फीसदी कामकाज हुआ था।

पिछले कुछ सत्रों से देखा जा रहा है कि विपक्ष के हंगामे के कारण सरकार बिना बहस के विधेयकों को पारित करवा लेती है। संसद की कार्यवाही स्थगित होने से सरकार को ही फायदा मिलता है।

लेकिन मानसून सत्र से ठीक पहले देश के प्रधान न्यायाधीश ने चिंता जताई है कि विपक्ष की जगह सिमट रही है। यह किसी भी संसदीय लोकतंत्र के लिए अच्छी खबर नहीं है। पिछले दिनों जो घटनाएं हुई हैं, उनसे दो चीजें पता चलती हैं। वैसे तो भाजपा का रवैया पहले से ही आक्रामक रहा है, लेकिन हालिया घटनाओं से स्पष्ट है कि वह विपक्ष के प्रति और आक्रामक हो गई है। जबकि विपक्ष और भी कमजोर होता जा रहा है तथा उसकी जगह लगातार सिकुड़ती जा रही है। इसलिए लगता है कि संसद का यह सत्र हंगामेदार रहने वाला है। इसी सत्र में राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव भी होंगे, जिनमें भाजपा हावी रहेगी। संसद सत्र के पहले दिन ही राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान होगा और यह लगभग पक्का है कि द्रौपदी मुर्मू अच्छे मतों के साथ राष्ट्रपति चुनी जाएंगी। एक आदिवासी महिला का देश के राष्ट्रपति पद के लिए चुना जाना बहुत बड़ी उपलब्धि है। हमें यह नहीं मालूम कि इससे आदिवासियों की जिंदगी में कितना फर्क आएगा, लेकिन उनके मन में यह भावना पैदा हो सकती है कि मैं भी देश के सबसे शीर्ष पद को हासिल कर सकता या कर सकती हूं। भाजपा ने सोची-समझी रणनीति के तहत राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुना। हिंदी भाषी प्रदेश और पश्चिमी भारत भाजपा के गढ़ हैं। हिंदी पट्टी और पश्चिमी भारत में जो सात-आठ राज्य आते हैं, वहां आदिवासियों की बड़ी संख्या है। भाजपा को लगता है कि पिछले दस वर्षों में उसके खिलाफ जो थोड़े-बहुत सत्ता-विरोधी रुझान पैदा हुए होंगे, उसकी भरपाई आदिवासी मतदाताओं को अपने पक्ष में लाने से हो जाएगी। दूसरी बात यह है कि द्रौपदी मुर्मू संथाल हैं और भाजपा की नजर पूर्वी राज्यों-ओडिशा, पश्चिम बंगाल और झारखंड पर है, जहां संथालों की बड़ी आबादी रहती है। इसलिए भाजपा चाहती है कि संथाल मतदाता विपक्ष के खेमे से निकल कर भाजपा के पाले में आएं। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान छह को होगा, और उसमें अलग ही समीकरण काम कर रहा है। राजग ने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ को उपराष्ट्रपति उम्मीदवार घोषित किया है, जो जाट समुदाय से आते हैं और मूलत: राजस्थान से ताल्लुक रखते हैं। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में जाटों की बड़ी आबादी रहती है। किसान आंदोलन के दौरान जाट समुदाय के बहुत से लोग भाजपा से विमुख हो गए थे, जिन्हें फिर से भाजपा अपने खेमे में लाने की कोशिश कर रही है। भाजपा की नजर अब राजस्थान पर है। पिछले दिनों की घटनाओं के आधार पर भाजपा को लगता है कि वह फिर से राजस्थान में जीत सकती है, क्योंकि हिंदू मतदाताओं का ध्रुवीकरण हो सकता है। धनखड़ का जाट और राजस्थानी होना उपराष्ट्रपति पद का प्रत्याशी बनाने का प्रमुख कारण हो सकता है। इसके अलावा तीसरी बात यह है कि जगदीप धनखड़ ममता बनर्जी के प्रति काफी आक्रामक राज्यपाल के तौर पर नजर आए थे। भाजपा को लग रहा होगा कि अगर वह राज्यसभा के सभापति बनते हैं, तो विपक्ष को भी आड़े हाथों ले सकते हैं। इन्हीं वजहों से भाजपा ने उन्हें उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के तौर पर चुना है। लेकिन जिस तरह से भाजपा ने राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार चुनकर एक राजनीतिक संदेश दिया है कि वह क्या करना चाहती है, विपक्ष वैसा नहीं कर पाया। विपक्ष अपने प्रत्याशी चयन के जरिये न तो कोई खास राजनीतिक संदेश दे पाया और न ही विपक्षी दल राष्ट्रपति चुनाव को लेकर एकजुट रह पाया। जैसे कि ममता बनर्जी ने यशवंत सिन्हा के नाम का समर्थन किया, लेकिन पश्चिम बंगाल में उन्हें बुलाया ही नहीं। दूसरी ओर, उद्धव ठाकरे और हेमंत सोरेन ने द्रौपदी मुर्मू के प्रति अपने समर्थन का एलान कर दिया। इसके अलावा, इस बीच दो और घटनाएं हुई हैं। एक तो यह एडवाइजरी जारी की गई है कि संसद सत्र के दौरान संसद परिसर में कोई धरना नहीं होगा और दूसरा, सत्र से ठीक पहले संसद सचिवालय द्वारा असंसदीय शब्दों की एक लंबी-चौड़ी सूची जारी की गई है।

नीरजा चौधरी

संपादकीय

राष्ट्रपति चुनाव, विपक्ष के वोट बंटते रहे हैं

राष्ट्रपति के चुनाव में इस बात का बहुत शोर हो रहा है कि विपक्षी पार्टियों के वोट बंट रहे हैं और उनकी एकता भंग हो गई है। मीडिया में इस बात के लंबे लंबे कार्यक्रम चल रहे हैं कि भाजपा के मास्टरस्ट्रोक के आगे कैसे विपक्ष धराशायी हो गया है। लेकिन यह कोई बात नहीं है। राष्ट्रपति के हर चुनाव में विपक्ष के वोट बंटते रहे हैं। उम्मीदवार के आधार पर पार्टियां फैसला करती हैं। शिव सेना ने दबाव में या जैसे भी एनडीए की उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू को समर्थन देने का फैसला किया। लेकिन यह काम वह पहले भी कर चुकी है। भाजपा के साथ रहते हुए दो चुनावों में उसने कांग्रेस के उम्मीदवार का समर्थन किया था। पहले 2007 में उसने मराठी के नाम पर प्रतिभा पाटिल का समर्थन किया और फिर 2012 में पता नहीं किस आधार पर प्रणब मुखर्जी का समर्थन किया।

पता नहीं टेलीविजन चैनलों के पत्रकारों को ध्यान है या नहीं कि शिव सेना ने यह काम 1997 में भी किया था, जब कांग्रेस और भाजपा सबने मिल कर केआर नारायणन को समर्थन दिया था तब शिव सेना ने भाजपा का साथ छोड़ कर निर्दलीय उम्मीदवार टीएन शेषन का साथ दिया था। इसी तरह 2002 के राष्ट्रपति चुनाव में भाजपा के उम्मीदवार एपीजे अब्दुल कलाम को कांग्रेस सहित सभी विपक्षी पार्टियों ने समर्थन दिया था लेकिन वामपंथी पार्टियों ने कैप्टेन लक्ष्मी सहगल तो उम्मीदवार बना कर उतारा था। राष्ट्रपति के पिछले चुनाव में बिहार में नीतीश कुमार राजद के समर्थन से मुख्यमंत्री थे लेकिन उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार रामनाथ कोविंद का समर्थन किया, जबकि कांग्रेस और राजद ने बिहार की ही मीरा कुमार को उम्मीदवार बनाया था।

पानी को लेकर हमारी सोच, मानसून भारत के अस्तित्व की धुरी

मानसून के आते ही देश के जो हिस्से पानी के लिए व्याकुल थे, पानी-पानी हो गए। जल संकट के लिए सबसे परेशान मध्य भारत में जैसे ही प्रकृति ने अपना आशीष बरसाया और ताल-तलैया, नदी-नाले उफन कर धरा को अमृतमय करने लगे, तो इसे तबाही, बर्बादी, विनाश कहा जाने लगा। पानी को ले कर हमारी सोच प्रारंभ से ही त्रुटिपूर्ण है। हमें बताया गया कि नदी, नहर, तालाब, झील आदि पानी के स्रोत हैं। हकीकत में हमारे यहां पानी का स्रोत केवल मानूसन ही है, नदी-दरिया तो पानी को सहेजने के स्थान मात्र हैं।

यह धरती पानी के कारण ही जीवों से आबाद है, पर पानी के आगम मानसून की हम कदर नहीं करते। उसकी नियामत को सहेजने के स्थान हमने खुद उजाड़ दिए। गंगा-यमुना के उद्गम स्थल से छोटी नदियों के गांव-कस्बे तक बस यही हल्ला है कि बरसात ने खेत-गांव सब कुछ उजाड़ दिया। पर यह भी सच है कि मानसून के विदा होते ही उन सभी इलाकों में पानी के लिए मारा-मारी होगी। यह देखने की जरूरत है कि मानसून में जल का विस्तार हमारी जमीन पर हुआ है या हमने ही जल विस्तार की नैसर्गिक परिधि पर कब्जा जमा लिया है। इस देश के लोकजीवन, अर्थव्यवस्था और पर्व-त्योहार का मूल आधार बरसात या मानसून का मिजाज ही है। मानसून भारत के अस्तित्व की धुरी है। जो शहर-महानगर पूरे साल वायु प्रदूषण से हलकान रहते हैं, इसी मौसम में वहां के लोगों को सांस लेने को साफ हवा मिलती है। खेती-हरियाली और साल भर के जल का प्रबंध इसी बरसात पर निर्भर है। इसके बावजूद जब प्रकृति अपना आशीष इन बूंदों के रूप में देती है, तो इसे खलनायक के रूप में देखा जाता है। इसका कारण यह है कि हमारे यहां मानसून को सम्मान देने की परंपरा खत्म होती जा रही है। इसका कारण है, तेजी से शहरों की ओर हो रहा पलायन और गांवों का शहरीकरण। विडंबना यह है कि हम अपनी जरूरतों का कुछ लीटर पानी घटाने को तो राजी हैं, पर मानसून से मिले जल को संरक्षित करने के मार्ग में खुद ही रोड़े अटकाते हैं, मानूसन को सहेजने वाली नदियों में पानी सुरक्षित रखने के बजाय रेत निकालने पर ज्यादा ध्यान देते हैं। आज जिन इलाकों में नदी से तबाही पर विलाप हो रहा है, वे सभी इलाके किसी नदी के रास्ते में यह सोचकर बसा लिए गए कि अब तो नदी दूसरे रास्ते बह रही है। राजधानी दिल्ली में ही अक्षरधाम मंदिर से लेकर खेलगांव तक को लें, अदालती दस्तावेजों में खुरपेच कर यमुना के जल ग्रहण क्षेत्र में कॉलोनियां बसा ली गईं।

मानसून भारत के अस्तित्व की धुरी है। जो शहर-महानगर पूरे साल वायु प्रदूषण से हलकान रहते हैं, इसी मौसम में वहां के लोगों को सांस लेने को साफ हवा मिलती है।

उत्तर प्रदेश में गंगा-यमुना या उनकी सखी-सहेलियों को जहां भी बांधने के प्रयास हुए, वहां जल-प्रलय होता है। गुजरात का उदाहरण सामने है। नर्मदा के बंधने से उसके हर शहर की आधुनिकता पर %पानी% फिर गया है। हमारी नदियां उथली हैं और कभी अतिक्रमण, कभी सुंदरता, तो कभी रिवर फ्रंट के नाम पर उन्हें संकरा किया गया। नदियों का अतिरिक्त पानी सहेजने वाले तालाब-बावली-कुएं नदारद हैं। फिर पानी सहेजने व उसके बहुद्देश्यीय इस्तेमाल के लिए बनाए गए बांध अरबों की लागत और दशकों के समय के बाद भी थोड़ी-सी बरसात को समेट नहीं पा रहे हैं। पहाड़, पेड़, और धरती को सामंजस्य के साथ खुला छोड़ा जाए, तो इंसान के लिए जरूरी साल भर के पानी को भूमि अपने गर्भ में ही सहेज ले। असल में हम मानसून के मिजाज, बदलते मौसम में बदलती बरसात और बरसात के जल को सहेज कर रखने के प्राकृतिक खजानों की रक्षा के प्रति न गंभीर हैं और न ही कुछ नया सीखना चाहते हैं।

पंकज चतुर्वेदी

मिला जुला

आज से महंगी हो गई हैं घर-घर इस्तेमाल होने वाली ये दस चीजें

आज से महंगी हो गई हैं घर-घर इस्तेमाल होने वाली ये दस चीजें

नई दिल्ली. महंगाई की मार झेल रहे आम आदमी की मुश्किलें आज से और बढ़ गई हैं। कई चीजों पर आज से जीएसटी चुकाना होगा। इनमें घर-घर में इस्तेमाल होने वाली कई चीजें शामिल हैं। इन पर पहले जीएसटी की दर जीरो थे। जीएसटी काउंसिल की हाल में चंडीगढ़ में हुई बैठक में कई चीजों पर जीएसटी लगाने का फैसला किया गया था। साथ ही कई चीजों पर जीएसटी की दर बढ़ा दी गई है। ये दरें 18 जुलाई यानी आज से लागू हो गई हैं। जीएसटी काउंसिल के फैसले लागू होने के बाद आज से कई खाद्य वस्तुएं महंगी हो जाएंगी। इनमें पहले से पैक और लेबल वाले खाद्य पदार्थ जैसे आटा, पनीर और दही शामिल हैं। इन पर अब पांच प्रतिशत जीएसटी) देना होगा। इस तरह 5,000 रुपये से अधिक किराये वाले अस्पताल के कमरों पर भी जीएसटी देना होगा। इसके अलावा 1,000 रुपये प्रतिदिन से कम किराये वाले होटल कमरों पर 12 प्रतिशत की दर से कर लगाने की बात कही गयी है।

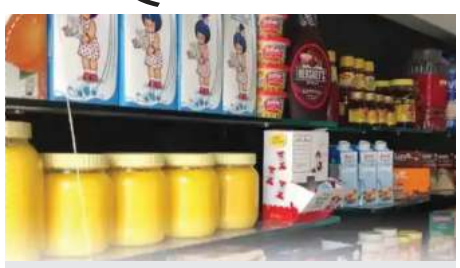

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में जीएसटी परिषद ने पिछले दिनों अपनी बैठक में डिब्बा या पैकेटबंद और लेबल युक्त (फोजन को छोड़कर) मछली, दही, पनीर, लस्सी, शहद, सूखा मखाना, सूखा सोयाबीन, मटर जैसे उत्पाद, गेहूं और अन्य अनाज तथा मुरमुरे पर पांच प्रतिशत जीएसटी लगाने का फैसला किया गया।

कौन सी चीजें हुई महंगी

हालांकि खुले में बिकने वाले बिना ब्रांड वाले उत्पादों पर जीएसटी छूट जारी रहेगी। 'प्रिंटिंग/ड्राइंग इंक', धारदार चाकू, कागज काटने वाला चाकू और 'पेंसिल शार्पनर', एलईडी लैंप, ड्राइंग और मार्किंग करने वाले उत्पादों पर कर की दरें बढ़ाकर 18 प्रतिशत कर दी गई हैं। सौर वॉटर हीटर पर अब 12 प्रतिशत जीएसटी लगेगा जबकि पहले पांच प्रतिशत कर लगता था। सड़क, पुल, रेलवे, मेट्रो, अपशिष्ट शोधन संयंत्र और शवदाहगृह के लिए जारी होने वाले कार्य अनुबंधों पर अब 18 प्रतिशत जीएसटी लगेगा, जो अबतक 12 प्रतिशत था।

कौन सी चीजें हुई सस्ती

हालांकि, रोपवे के जरिये वस्तुओं और यात्रियों के परिवहन तथा कुछ सर्जरी से जुड़े उपकरणों पर कर की दर घटाकर पांच प्रतिशत की गई है। पहले यह 12 प्रतिशत थी। ट्रक, वस्तुओं की ढुलाई में इस्तेमाल होने वाले वाहनों पर अब 12 प्रतिशत जीएसटी लगेगा। यह रेट पहले 18 प्रतिशत था। इसी तरह बागडोगरा से पूर्वोत्तर राज्यों तक की हवाई यात्रा पर जीएसटी छूट अब 'इकनॉमी' श्रेणी तक ही सीमित रहेगी। आरबीआई (भारतीय रिजर्व बैंक), बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड जैसे नियामकों की सेवाओं के साथ रिहायशी मकान कारोबारी इकाइयों को किराये पर देने पर कर लगेगा।

धार में पुल की रेलिंग तोड़ नर्मदा नदी में गिरी रोडवेज बस

13 की मौत, 40 लोगे थे सवार

मध्यप्रदेश के धार जिले के इंदौर से पुणे जा रही महाराष्ट्र रोडवेज की एक बस खलघाट इलाके में पुल की रेलिंग तोड़ने के बाद नर्मदा नदी में गिर गई. अब तक 15 लोगों को बचाया गया है जबकि 13 शव बरामद कर लिए गए हैं. बस में लगभग 40 लोग सवार थे. राहत और बचाव कार्य जारी है.बारिश के बीच उफनती नदी से बस को निकाल लिया गया है.

बता दें कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज प्रात: खलघाट,खरगोन में हुई बस दुर्घटना का संज्ञान लिया है. उन्होंने बताया कि बस के नदी में गिर जाने की सूचना मिलते ही प्रशासन को शीघ्र पहुंचने के निर्देश दिए गए. राहत और बचाव कार्य जारी है.जिला प्रशासन घटनास्थल पर है. मुख्यमंत्री ने एसडीआरएफ को भेजने के निर्देश दिए है, इसके अतिरिक्त आवश्यक संसाधन घटनास्थल पर भेजने के निर्देश दिए गए है।

***घायलों** के समुचित इलाज की व्यवस्था के निर्देश दिए गए हैं. खरगोन, इंदौर जिला प्रशासन के साथ मुख्यमंत्री निरंतर संपर्क बनाए हुए हैं। एमपी के गृहमंत्री ने कहा कि इंदौर से पुणे जा रही महाराष्ट्र सरकार की 'एसटी बस धामनोद के पास खलघाट में नर्मदा नदी में गिरने की बहुत ही दुखद और पीड़ादायी दुर्घटना हुई है. मौके पर सभी जिम्मेदार प्रशासनिक अधिकारी और रेस्क्यू टीमें पहुंच गई है. रेस्क्यू के सभी प्रयास किए जा रहे हैं. 15 लोगों का रेस्क्यू किया गया है. दुर्घटना के कारणों का पता लगाया जा रहा है.*

इमरान खान राज की ओर फिर बढ़ा पाकिस्तान

पंजाब की हार से बाजवा और शरीफ को बड़ा झटका

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में करो या मरो की जंग बने पंजाब प्रांत के उप चुनाव में इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ ने नवाज शरीफ की पार्टी पीएमएल एन का सूपड़ा साफ कर दिया। अनाधिकारिक नतीजों के मुताबिक उपचुनाव की 20 सीटों में से 15 पर पीटीआई के उम्मीदवारों को बंपर जीत मिली है। इसके साथ ही 'मिनी पाकिस्तान' कहे जाने वाले पंजाब प्रांत में एक बार फिर से इमरान खान की पार्टी के सत्ता में आने का रास्ता साफ हो गया है। विश्लेषकों का कहना है कि इस चुनावी जंग से यह भी साबित हो गया कि इमरान खान शरीफ परिवार से लोकप्रियता की जंग में जीत गए हैं।

चुनावी विश्लेषकों का इससे पाकिस्तान में अब जल्द ही आम चुनाव हो सकते हैं और इमरान खान फिर से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बनने सकते हैं। इमरान खान भी इसी रास्ते पर बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। दरअसल, यह शहबाज शरीफ सरकार और उनकी पार्टी के लिए एक जनमत संग्रह की तरह से था। इस जनमत संग्रह में इमरान खान ने स्पष्ट रूप से शहबाज सरकार जीत दर्ज की है।

जगदीप धनखड़ के नामांकन से राहत में टीमएसी

कहा- हमें परेशान करने का इनाम मिला

कोलकाता। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस ने जगदीप धनखड़ को उम्मीदवार बनाया है। हालांकि, भाजपा के इस फैसले पर पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस पार्टी ने खास प्रतिक्रिया दी है। टीएमसी ने एक ओर जहां राहत की सांस ली है। साथ ही यह भी कहा कि धनखड़ को बंगाल सरकार के लिए मुश्किल पैदा करने का इनाम मिला है। उनके खिलाफ विपक्ष ने मागरिट अल्वा को साझा उम्मीदवार बनाया है। टीएमसी ने धनखड़ पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को बदनाम करने वरिष्ठ नेता और टीएमसी सांसद सौगत रॉय ने कहा, 'जगदीप धनखड़ पश्चिम बंगाल प्रशासन के लिए मुश्किलें पैदा करने और परेशान करने वाले तत्व थे। धनखड़ का नामांकन बंगाल सरकार के जीवन को दुखद बनाने का इनाम है। हमें राहत है कि उप राष्ट्रपति के तौर पर उनका नामांकन हुआ है।'

धनखड़ सोमवार को उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन दाखिल कर सकते हैं।

मध्यप्रदेश निकाय चुनाव

तोमर-सिंधिया का गढ़ भी बीजेपी हारी, ग्वालियर पर 57 साल बाद कांग्रेस का कब्जा

भोपाल। मध्य प्रदेश नगरीय निकाय चुनावों में दिलचस्प नतीजे देखने को मिले हैं. जहां आम आदमी पार्टी ने पहली बार राज्य के किसी भी चुनाव में अपनी विजयी मौजूदगी दर्ज कराई है. चुनावों में महापौर की एक सीट, पार्षदों की 17 सीटों पर आप को जीत मिली है. वहीं, राज्य में सत्तारूढ़ पार्टी बीजेपी ने कांग्रेस को अपनी अहम सीट गंवा दी. नगर निकाय चुनाव की रविवार को हुई पहले चरण की मतगणना में कुल 11 नगर निगमों के महापौर पदों में से सात पर बीजेपी, तीन पर कांग्रेस और एक पर आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार को जीत मिली है. प्रदेश के कुल 16 नगर निगमों के पहले चरण के मतदान में, 11 नगर निगम के चुनाव छह जुलाई को हुए थे।

खरसिया के सिविल अस्पताल में शुरू होने जा रहा हमर लैब

जिले के अन्य स्वास्थ्य केन्द्रों में भी 15 दिनों में होगा हमर लैब शुरू

जोहार छत्तीसगढ़-रायगढ़।

छत्तीसगढ़ शासन हमर लैब के नाम से सरकारी पैथालॉजी लैब शुरू करने जा रही हैं, जिसके अंतर्गत जिला अस्पतालों की लैब को ही हमर लैब में डेवलप किया जा रहा है, ताकि वहां सभी तरह की जांच की जा सके।

इसके लिए जरूरी व एडवांस मशीनें लगाई जाएंगी। जिसके फलस्वरूप खून एवं पेशाब संबंधी समस्त जांच नि:शुल्क एवं न्यूनतम दर में उपलब्ध कराया जाएगा। इसका फायदा ये होगा कि ग्रामीण लोगों को भी जरूरी जांच के लिए शहर नहीं आना पड़ेगा। रायगढ़ जिला अंतर्गत समस्त सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों एवं सिविल अस्पतालों में हमर लैब की स्थापना की जा रही है जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के उपकरणों जैसे एचबीएआईसी, बायोकैमेस्ट्री एनालाइजर, सीबीसी, यूरिन एनालाइजर, इलेक्ट्रोफोरेसिस मशीन, टू-नाट मशीन, इएसअसार एनालाइजर इत्यादि की स्थापना की जाएगी।

प्रथम चरण में खरसिया के सिविल अस्पताल में हमर लैब का कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा हमर लैब के माध्यम से समस्त प्रकार के जांच सुविधा प्रदाय की जाएगी। आगामी 15 दिनों के अंदर अन्य सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में हमर लैब की सुविधा प्रारंभ कर दी जाएगी। जहां मरीज अपने लीवर, किडनी, रक्त अल्पता लिपिड प्रोफाइल तथा पेशाब संबंधी जांच करा सकते है।

हमर लैब से मरीजों को मिलेगी सहूलियत

पीएचसी, सीएचसी से लेकर जिला व मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में बिना लैब या डायग्नोस्टिक सेंटर के बीमारी का इलाज संभव नहीं है। उदाहरण के लिए किसी मरीज को बुखार है तो मलेरिया, टाइफाइड, डेंगू या पीलिया की जांच कराई जाती है। ताकि रिपोर्ट से पता चल सके कि मरीज की बीमारी क्या है? रिपोर्ट के आधार पर ही डॉक्टर मरीज का इलाज शुरू करते हैं। जिससे मरीजों को जल्द आराम मिले।

न्यूनतम शुल्क में होगी जांच

जिले के स्वास्थ्य केन्द्रों में हमर लैब खुलने जा रही हैं। इसमें कोई भी व्यक्ति न्यूनतम शुल्क में कई प्रकार के टेस्ट करवा सकेगा। इससे लोगों को विभिन्न प्रकार की जांच में लगने वाले खर्च से राहत मिलेगी।

जिले में तीन कंपनियों के उर्वरक पाये गये अमानक

कृषि विभाग ने अमानक उर्वरकों की बिक्री एवं वितरण पर लगाया प्रतिबंध, कंपनियों को नोटिस जारी

जोहार छत्तीसगढ़-कोरबा।

जिले के एक उर्वरक दुकान और एक सहकारी समिति में भण्डारित उर्वरक नमूना विश्लेषण में अमानक पाए गए हैं। उक्त स्थानों में कुल तीन कंपनियों के उर्वरक अमानक पाए जाने पर कृषि विभाग द्वारा उर्वरकों की बिक्री एवं वितरण पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अमानक पाए गए उर्वरकों के लिए संबंधित उर्वरक निर्माता कंपनियों को नोटिस भी जारी कर दिया गया है। उर्वरक कंपनियों को उर्वरक के अमानक पाए जाने के कारण का जवाब प्रस्तुत करने के लिए आदेशित किया गया है। मेसर्स हेमन्त कृषि केन्द्र रलिया कटघोरा में नेशनल फर्टिलाइजर कंपनी के 30.15 टन यूरिया, बीईसी फर्टिलाइजर्स कंपनी के 22ण्50 टन एसएसपी 16 प्रतिशत एवं आदिम जाति सेवा सहकारी समिति पोड़ी पाली में आईपीएल सीथाकाठी कंपनी के 12.55 टन एमओपी 60 प्रतिशत उर्वरक के जांच नमुने विश्लेषण उपरांत अमानक पाये गये है। विश्लेषण रिपोर्ट के अनुसार आईपीएल सीथाकाठी कंपनी के एमओपी 60 प्रतिशत उर्वरक निर्धारित नमी के अनुसार नही पाये जाने के कारण विश्लेषण में अमानक पाये गये हैं। नेशनल फर्टिलाइजर कंपनी के यूरिया उर्वरक निर्धारित पार्टिकल साइज के अनुसार नही पाये जाने के कारण अमानक पाये गये है। इसी प्रकार बीईसी फर्टिलाइजर कंपनी के एसएसपी 16 प्रतिशत उर्वरक में पोषक तत्व निर्धारित मात्रा में नही पाये जाने के कारण अमानक पाये गये है। उप संचालक कृषि अनिल शुक्ला ने बताया कि अमानक पाए जाने पर संबंधित कंपनियों को नोटिस जारी किया गया है। साथ ही जिले में अमानक पाये गये लाट के उर्वरकों के भण्डारण एवं वितरण को प्रतिबंधित किया गया है। उन्होने बताया कि किसानों को सही दाम एवं उच्च गुणवत्तायुक्त रासायनिक उर्वरक की उपलब्धता के लिए कृषि विभाग द्वारा समय.समय पर उर्वरक नमुनों को विश्लेषण के लिए रायपुर स्थित प्रयोग शाला भेजा जाता है। उर्वरक निरीक्षकों के द्वारा उर्वरक नमुना विश्लेषण के लिए उपसंचालक कृषि उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला लाभांडी रायपुर भेजा गया था। भेजे गए नमुनों में से उर्वरकों का विश्लेषण अमानक स्तर के प्राप्त हुए हैं।

जिले में बच्चों की भाषाई एवं गणितीय दक्षता विकास हेतु ईजीएल प्रशिक्षण संपन्न

जोहार छत्तीसगढ़-रायगढ़।

जिले के तीन विकासखंड रायगढ़, खरसिया एवं तमनार में कक्षा पहली एवं दूसरी में अध्ययनरत विद्यार्थियों के भाषाई एवं गणितीय दक्षता उन्नत करने के लिए जिला प्रशासन, यूनिसेफ एवं रूम टू रीड के सहयोग से ईजीएल प्रशिक्षण शासकीय नटवर उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में संपन्न हुआ।

यह प्रशिक्षण 21 जुलाई 2022 तक आयोजित किया जाना है। 13 जुलाई को यूनिसेफ एवं रूम टू रीड के राज्य प्रशिक्षक एवं तीनों विकासखंड के चयनित मास्टर ट्रेनर्स का उन्मुखीकरण जिला परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा रायगढ़ में संपन्न हुआ तथा 14 से 16 जुलाई 2022 तक 3 दिवसीय प्रशिक्षण जिसमें तीनों विकासखंड के संकुल समन्वयक विकासखंड स्त्रोत समवयक एवं मास्टर ट्रेनर्स शामिल हुए। विदित हो कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रुप से कक्षा एक एवं कक्षा दो में अध्ययन करने वाले बच्चों के भाषाई दक्षता विकसित करने के लिए भाषा से संबंधित वर्णों को पहचानना, वर्णों को जोड़कर शब्द बनाना एवं शब्द का अर्थ समझने की प्रक्रिया को बड़े ही सरल तरीके से बताया गया तथा गणितीय दक्षता विकसित करने हेतु अंको की पहचान कर उनके व्यवहारिक उपयोग करने के सरलतम तरीकों को आकर्षक तरीके से बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद यह महसूस किया जा रहा है कि इस विशेष तकनीक के प्रयोग से रायगढ़ जिले के तीन विकासखंड में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में चल रहे कार्यक्रम के बाद बच्चों को भाषा को समझने की अवधारणा स्पष्ट होगी तथा वे विशेष रूचि के साथ कक्षा की ओर आकर्षित होंगे। प्रशिक्षण का प्रथम दिवस रायगढ़ जिला शिक्षा अधिकारी श्री आर.पी.आदित्य एवं जिला मिशन समन्वयक आर.के.देवांगन के विशेष उपस्थिति में प्रारंभ हुआ।

कार्यक्रम में सहायक परियोजना अधिकारी भुवनेश्वर पटेल, ईजीएल कार्यक्रम के जिला नोडल अधिकारी श्री आलोक स्वर्णकार तथा जिले की सभी विकासखंड स्त्रोत समन्वयक एवं सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारीगण उपस्थित थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम द्वितीय दिवस तथा तृतीय दिवस पर प्रशिक्षकों के द्वारा विशेष चर्चा की गई। जिला शिक्षा अधिकारी आर.पी.आदित्य ने प्रारंभ दिवस पर प्रशिक्षार्थियों से प्रशिक्षण के उद्देश्य, आवश्यकता पर विशेष मार्गदर्शन एवं संकुल स्त्रोत समन्वयक तथा मास्टर ट्रेनर्स के द्वारा भविष्य में किए जाने वाले कार्यों पर विस्तृत चर्चा की प्रशिक्षण दिवस के अंतिम दिवस संकुल स्त्रोत समन्वयकों से तीन दिवसों में प्राप्त ज्ञान पर विस्तृत चर्चा भी की गई तथा आवश्यक निर्देश दिए गए। जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला मिशन समन्वयक द्वय ने 22 जुलाई 2022 को गौरेला पेंड्रा जिले से आ रहे एक्स्पोजर विजिट के सदस्यों के आने से पूर्व ईजीएल केंद्रों को व्यवस्थित कर आवश्यक का तैयारी करने हेतु निर्देशित किया गया। कार्यक्रम के अगले चरण में 21 से 23 जुलाई 2022 तक 3 दिवसीय प्रशिक्षण कक्षा पहली एवं दूसरी कक्षा को अध्यापन करने वाले शिक्षकों को विकासखंड स्तर पर दिया जाएगा। इसके लिए रायगढ़ विकास खंड में 5 प्रशिक्षण केंद्र, खरसिया विकास खंड में चार प्रशिक्षण केंद्र तथा तमनार विकास खंड में 3 प्रशिक्षण केंद्र बनाए गए है। इस कार्यक्रम से रायगढ़ खरसिया एवं तमनार विकासखड के 525 विद्यालय के कक्षा पहली एवं दूसरी में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त होगा।

एक नजर

प्राकृतिक आपदा में जनहानि के दो मामलों में प्रभावित परिजन हेतु 08 लाख की राशि स्वीकृत

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल ने प्राकृतिक आपदा में जनहानि के दो मामलों में प्रभावित परिजन हेतु 08 लाख रुपए की आर्थिक सहायता अनुदान राशि स्वीकृत की गई है। जिसमें आग से जलने पर बगीचा तहसील के ग्राम बोड़ापहरी निवासी अलबीना केरकेट्टा की मृत्यु 06 मार्च 2022 को हो जाने पर मृतिका के निकटतम वारिस मृतिका के पति पितरूस हेतु 4 लाख एवं मनोरा तहसील के ग्राम झरगांव निवासी मंगलेश्व राम की मृत्यु 08 फरवरी 2021 को हो जाने पर मृतक के निकटतम वारिस मृतक की पत्नी सिगड़ी हेतु 4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता अनुदान राशि स्वीकृत की गई है।

वाटर वॉरियर मसाजी द्वारा जल संवर्धन हेतु कांसाबेल में अधिकारी कर्मचारियों को दिया प्रशिक्षण

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

कलेक्टर रितेश अग्रवाल के मार्गदर्शन में जल संवर्धन विशेषज्ञ अय्यप्पा मसाजी द्वारा जल संरक्षण एवं संवर्धनए भूमिगत जल स्तर में वृद्धि हेतु वर्षा जल के प्रभावी संचयन के सम्बंध में जनपद पंचायत कांसाबेल के बगिया गौठान सहित विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कर कांसाबेल, फरसाबहार, बगीचा, कुनकुरी एवं पत्थलगांव के मनरेगा, आरईएस, पीएचई विभाग के उप अभियंता, तकनीकी सहायकों को प्रशिक्षण प्रदाय कर वाटर हार्वेस्टिंग की उपयोगिता को समझाया। अय्यप्पा ने कहा कि भूमिगत जल स्तर को बढ़ाने के लिये वर्षा जल का अधिक से अधिक संरक्षण आवश्यक है। अपने क्षेत्र के पानी को अधिक से अधिक रोक कर भूमिगत करना आवश्यक है। जिससे भूमिगत जल स्तर में वृद्धि हो। उन्होंने कैचमेंट एरिया को ध्यान रखकर जल संरक्षण हेतु संरचना निर्माण पर जोर दिया। इस दौरान उन्होंने जल संरक्षण हेतु विभिन्न तकनीकी पहलुओं तथा जगह के आवश्यकता अनुरूप संरचना निर्माण के सम्बंध में विस्तार से जानकारी प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, जिला व जनपद स्तर के विभिन्न तकनीकी अमलो के साथ साथ अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

अनुसूचित जाति वर्ग के युवाओं को विशेष केन्द्रीय सहायता अंतर्गत निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण हेतु 5 अगस्त तक आवेदन आमंत्रित

जोहार छत्तीसगढ़-रायगढ़।

प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजनान्तर्गत जिले के विकासखण्ड बरमकेला, धरमजयगढ़, पुसौर, खरसिया तथा सारंगढ़ के चयनित ग्राम के गरीबी रेखा के सर्वेक्षित अनुसूचित जाति वर्ग के युवाओं को मुख्यमंत्री कौशल विकास योजनान्तर्गत पंजीकृत संस्थाओं के माध्यम से नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान कर शासकीय तथा निजी क्षेत्र में रोजगार/स्वरोजगार योजनाओं में स्थापित करने का प्रावधान है। उक्त नि:शुल्क प्रशिक्षण के लिए इच्छुक आवेदक 05 अगस्त 2022 तक सहायक संचालक जिला कौशल विकास प्राधिकरण, कार्यालय रायगढ़ में अथवा कार्यालयीन ई-मेल cssdmraigarh@gmail.com में आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं तथा संबंधित क्षेत्र के प्रशिक्षण संस्था शा.आईटीआई सारंगढ़, सरिया, पुसौर, खरसिया, तमनार, घरघोड़ा में भी आवेदन पत्र जमा कर सकते हैं। चयनित ग्राम की सूची, पंजीकृत प्रशिक्षण संस्था एवं आवेदन पत्र का प्रारूप जिले की वेबसाईट www.raigarh.gov.in तथा कार्यालयीन सूचना पटल पर अवलोकन किया जा सकता है।

एकलव्य विद्यालयों में कक्षा सातवीं आठवी एवं नवमीं के रिक्त सीटों में भर्ती के लिए आवेदन 21 जुलाई तक

जोहार छत्तीसगढ़-कोरबा।

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों में सीबीएसई पाठ्यक्रम अंतर्गत अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों का वर्ष 2022.23 में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किये गये है। जिले में संचालित तीन एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों के कक्षा सातवींए आठवीं एवं नवमीं में रिक्त सीटों में भर्ती के लिए 21 जुलाई 2022 शाम 5:30 बजे तक निर्धारित प्रारूप में आवेदन मंगाये गये है। आवेदन कार्यालय सहायक आयुक्त आदिवासी विकास कोरबा में निर्धारित तिथि तक प्रस्तुत किया जा सकता है। आवेदन के संबंध में विस्तृत जानकारी एवं आवेदन प्रारूप के लिए जिले के वेबसाईट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट कोरबा डॉट जीओवी डॉट इन का अवलोकन किया जा सकता है। सहायक आयुक्त आदिवासी विकास कोरबा श्रीमती माया वारियर ने बताया कि एकलव्य विद्यालयों में कुल नौ रिक्त सीटों के लिए आवेदन मंगाया गया है। एकलव्य विद्यालय छुरीकला में कक्षा नवमीं में बालक के दो और बालिका एक सीट रिक्त है।

सफलता की कहानी

गौठान की गंगा स्व.सहायता समूह की महिलाएं हल्दी मसाला पिसाई व पीडीएस संचालन कर बन रही - आत्मनिर्भर

* हल्दी मसाला का विक्रय से 6 हजार व पीडीएस संचालन से 1 लाख 65 हजार की हुई आमदनी

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

जिले में महिलाओं को सशक्त बनाने एवं उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने जिला प्रशासन द्वारा स्व.सहायता समूह से जोड़कर उन्हें गोठान में ही विभिन्न गतिविधियों के तहत् आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। इसी कड़ी में दुलदुला विकासखंड के ग्राम बंगुरकेला गोठान की मां गंगा स्व.सहायता समूह की महिलाओं को जिला प्रशासन द्वारा हल्दी पिसाई मशीन प्रदान किया गया।

जिसके उपरांत गंगा स्व.सहायता समूह की महिलाओं तीन माह में हल्दी, मशाला धनिया की पिसाई कर 6 हजार रुपए आमदनी अर्जित कर चुकी है। साथ ही समूह की महिलाएं पीडीएस संचालन का कार्य भी कर रही है। जिससे उन्होंने अब तक 1 लाख 65 हजार 70 रुपए की आमदनी अर्जित कर ली है। समूह की महिलाओं ने बताया कि अब तक 240 किलो हल्दी, मिर्च, मशाला और धनिया का पिसाई किया गया है। जिसमें कुल 11950 रुपए का विक्रय महिलाओं द्वारा किया गया है। जिससे उन्हें 6 हजार का लाभ प्राप्त हुआ है। समूह की महिलाओं ने बताया कि उनके समूह में 10 महिलाएं है। जो कि 04 मार्च 2022 से कार्य कर अपने परिवार को आर्थिक रूप से मदद कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रशासन द्वारा महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए विशेष रूप से कार्य किया जा रहा है। जिसका उन्हें सीधा लाभ मिल रहा है। महिलाओं ने कहा कि आज वे खुद आत्मनिर्भर बन रही है। परिवार के हर छोटे.बड़े के कार्य के लिए होने वाले खर्च में अपनी भी भागीदारी सुनिश्चित कर पा रही है। महिलाओं ने कहा कि गोठान में विभिन्न योजनाओं का संचालन कर महिलाओं रोजागर से जोड़ा गया है। यह अत्यंत सराहनीय कार्य है। सभी महिलाओं ने इस जनकल्याणकारी योजना संचालन के लिए छत्तीसगढ़ शासन एवं जिला प्रशासन को सहृदय धन्यवाद दिया। दुलदुला ब्लॉक की क्षेत्रीय समन्वयक शीला कुजूर ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा समूह की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सतत प्रयास किया जा रहा है। इसी कड़ी में उद्यान विभाग द्वारा समूह को 60 हजार की लागत वाली मसाला पिसाई मशीन उपलब्ध कराया गया है। साथ ही महिलाओं को प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। समूह द्वारा बनाए जा रहे मसालों को सीमार्ट, स्थानीय हाट-बाजार में विक्रय किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रशासन द्वारा महिलाओं को आगे बढ़ने हेतु निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। महिलाएं भी पूरी उत्साह के साथ कार्यों में अपनी सहभागिता निभा रही है।

अब परिवार के हर छोटे-बड़े कार्य में अपना सहयोग दे रही महिलाएं

*** जिला प्रशासन एवं छत्तीसगढ़ शासन को गौठान में विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने हेतु दिया धन्यवाद**

कृषि संबंधित प्रशिक्षण के लिए कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र में हुआ रावे कार्यक्रम का शुभारंभ

जोहार छत्तीसगढ़-रायगढ़।

कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र रायगढ़ में गत दिवस बीएससी (कृषि) चतुर्थ वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए कृषि संबंधित प्रशिक्षण के लिए रावे कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत शैक्षणिक प्रभारी डॉ.श्रीकांत सांवरगांवकर के उद्बोधन के साथ शुरू हुआ जिसमें उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया की रावे के अंतर्गत वो किसानों से कृषि संबंधित अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और किसानों को वो कृषि की उन्नत तकनीक से अवगत करा सकते हैं। एनएसएस प्रभारी गंगा राम राठिया ने रावे के महत्व के ऊपर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को पूरी मेहनत के साथ इसे करने को कहा। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.ए.के.सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बताया की रावे कार्यक्रम के तहत विद्यार्थीगण किसानों से अपने अनुभव कार्य एवं तकनीक को साझा करेंगे। उन्होंने बताया कि अगर विद्यार्थी रावे को प्रायोगिक रूप से निष्ठापूर्वक करें तो इससे उनको बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। कार्यक्रम के अगले वक्ता के रूप में डॉ.रोशनी भगत ने विद्यार्थियों को कृषि क्षेत्र पर कार्य करके उससे ज्यादा से ज्यादा सीखने के लिए प्रेरित किया। उद्यानिकी विज्ञान की वैज्ञानिक डॉ.सरिता अग्रवाल ने छात्र-छात्राओं को पौधरोपण कार्यक्रम को प्रभावी रूप से करने पर बल दिया। रावे प्रभारी संदीप पैंकरा ने रावे के बारे में छात्र-छात्राओं से विस्तार से बताते हुए कहा कि रावे कार्यक्रम के लिए समीपस्थ गांव संबलपुरी को चुना गया है। चतुर्थ वर्ष के 45 विद्यार्थी पूरे सेमेस्टर भर विभिन्न विषयों की तकनीकी कार्य साझा करेंगे।

उन्होंने बताया कि विद्यार्थी महाविद्यालय के अलग-अलग विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शनुसार कृषि के विभिन्न विषयों के नवीन तकनीक को सीख सकते हैं। महाविद्यालय के एलपीएम सहायक प्राध्यापक डॉ.ब्रजेश पटेल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा की रावे कार्यक्रम के अंतर्गत उन्हें डेरी, मछलीपालन और मुर्गी फार्म का भ्रमण करवाया जाएगा और उनसे संबंधित समस्या और उसका निदान बताया जाएगा। महाविद्यालय के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी सुनील कुमार गौतम ने विद्यार्थियों को रावे के दौरान सही सूचनाओं को संकलित कर रावे रिपोर्ट बनाने के लिए आह्वान किया। उन्होंने विद्यार्थियों से इस बात पर विशेष जोर दिया की पूर्व में जो रावे रिपोर्ट पुस्तकालय में जमा हैं उनकी नकल किए बिना जो मूल कार्य वो इस सत्र के रावे में कर रहें है उनकी रिपोर्ट निष्ठापूर्वक तैयार करें। अतिथि शिक्षक के रूप कृषि यंत्रिकी के डॉ.योगेश कोसरिया ने विद्यार्थियों से मशीनों को प्रायोगिक से उपयोग करने पर बल दिया।

कृषि विभाग द्वारा वन पट्टाधारियों को बीज व कीटनाशक दवाओं का वितरण

जोहार छत्तीसगढ़ – धरमजयगढ़।

कृषि विभाग धरमजयगढ़ द्वारा अनेक गांवों में बीज एवं कीटनाशक दवाओं का नि:शुल्क वितरण किया गया। उपसंचालक कृषि रायगढ़ हरीश राठौर के निर्देश पर, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी धरमजयगढ़ पीआर राठिया के मार्गदर्शन में 18 जुलाई 2022 को खड़गांव में जनपद पंचायत सदस्य ओमकार राठिया के हाथों सामग्री का वितरण कराया गया। ग्राम हाटी, जोगड़ा, सिथरा, खड़गांव के वन पट्टाधारी किसानों को पैडी वीडर, बीज ग्राम मूंग, रागी बीज, कीटनाशक दवा निमैक्स का वितरण किया गया। जिसमें क्षेत्रीय ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी शशि प्रकाश पैकरा द्वारा,फसल बीमा योजना,धान के बदले अन्य फसल लगाने, वन पट्टाधारी किसानों को KCC बनवाने एवम समसामयिक विषयों पर जानकारी दिया गया।

सावन के पहले सोमवार शिवालयों में उभड़ी भीड़

जोहार छत्तीसगढ़–सुकमा।

सावन महीने के पहले सोमवार को शहर के मध्य स्थित श्री-श्री महाकाली मंदिर मे स्थित शिवालय में हर-हर महादेव, जय ओम शिवकारा की गूंज सुनाई दी। सुबह से ही श्रद्धालुओं की मंदिरों में खासी भीड़ रही। वहीं सुकमा के कालीमंदिर के शिव मंदिरों के साथ अन्य मंदिरों पर भी दिनभर भक्तों को तांता लगा रहा। साथ ही अंचल के सभी प्रमुख शिवालयों में सुबह से ही श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया था। गौरतलब है कि सावन माह के पहले सोमवार दिन शिवलिंगों का दूधए जल से अभिषेक किया गया। शिवलिंगों को पुष्प, बेल पत्र, आंक, धतूरे से सजाकर महाआरती की गई। इस दौरान मंदिरों में घंटी, घड़ियाल, शंख व झालर के बीच भोलेनाथ के उद्घोष से माहौल भक्तिमय बना रहा।

नशा सामाजिक बुराइयों के खिलाफ बेमेतरा पुलिस ने चलाया जन जागरण अभियान

जोहार छत्तीसगढ़– बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन एवं अति.पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल, अति.पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन, एसडीओपी बेरला तेजराम पटेल, एसडीओपी बेमेतरा राजीव शर्मा के मार्गदर्शन में जिले में थाना / चौकी प्रभारियों के द्वारा नशा मुक्ति एवं सायबर जागरूकता अभियान चलाकर आमजनों को जागरूक किया जा रहा है इस अभियान के तहत दिनांक 17 जुलाई.2022 को थाना बेरला प्रभारी उप निरीक्षक नासिर खान के मार्गदर्शन में प्रधान आरक्षक संदीप साहू एवं अन्य स्टाफ के द्वारा नशा मुक्ति व नशा से आजादी एवं सायबर जागरूकता के लिए थाना बेरला क्षेत्रांतर्गत ग्राम बारगांव में आमजनों को जागरूक करने के उद्देश्य से बैनर के माध्यम से नशा बंदी एवं सायबर जागरूकता का संदेश दिया गया। आमजनो को बताया कि बीडी, सिगरेट, शराब, जुआ, सट्टा, गांजा जैसे नशा शारीरिक समस्याओं के साथ ही आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी नुकसान का कारण बनता है।

लोगो को नशा नहीं करने का संकल्प व इसके दुष्प्रभाव के बारे में भी बताया गया। नशे से ग्रसित व्यक्ति तनाव में रहता है और उसे मानसिक परेशानियां घेर लेती है, इसके अलावा उसे स्वास्थ्य परेशानियां भी होती है और नशे में अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है। क्योकि ऐसे ही व्यक्ति अपराधों को बढावा देता है। इसलिए हमें नशे से दुर रहना चाहिए। किसी भी प्रकार का नशा को छोडने के लिए व्यक्ति को दृढ संकल्पित होने की आवश्यकता है। इसके लिए युवाओं को आगे आकर समाज में जागरूकता लाने की आवश्यकता है ताकि समाज में सामाजिक मधुरता बना रहे तथा साइबर अपराध, चिटफंड, फर्जीकाल ठगी, एटीएम ठगी, ऑनलाईन ठगी, फेसबुक, से संबंधित अपराधों के संबंध में जानकारी दी गई। इस अवसर पर ग्राम बारगांव के सरपंच, पंच, कोटवार, सहित बच्चे, युवा, बुजुर्ग उपस्थित रहे।

बेमेतरा पुलिस की कार्यवाही 27 साल से फरार स्थायी वारंटी गिरफ्तार

जोहार छत्तीसगढ़– बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेन्द्र सिंह के निर्देशन एवं अति.पुलिस अधीक्षक बेमेतरा पंकज पटेल व एसडीओपी बेमेतरा राजीव शर्मा के मार्गदर्शन में समस्त थाना/चौकी प्रभारियो के द्वारा प्रतिदिन पुरे जिले में स्थायी एवं गिरफ्तारी वारंटियो को पकड़ने हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है जिसके तहत थाना बेमेतरा स्टाफ के द्वारा माननीय न्यायिक मजिस्ट्रेट बेमेतरा न्यायालय के प्रकरण क्र. 119/82 , अपराध क्रमांक206/80 धारा 342,379 भादवि में 27 साल से फरार चल रहे स्थायी वारंटी अनवर पिता करीम ऊर्फ रहीम मोहम्मद उम्र 63 साल साकिन देवांगन मोहल्ला कवर्धा हाल पता वार्ड नं. 21 बेमेतरा थाना व जिला बेमेतरा को जरिये मुखबिर कि सूचना पर आज दिनांक 18.07.2022 को घेराबंदी कर पकड़ा गया।उपरोक्त वारंटी को माननीय न्यायालय में पेश किया गया।

उक्त कार्यवाही में थाना बेमेतरा प्रभारी निरीक्षक प्रेम प्रकाश अवधिया, प्रधान आरक्षक रविर्न्द्र तिवारी, राहुल यादव, राजेश ध्रुव, शिव कुमार सेन एवं अन्य स्टाफ शामिल थे।

कलेक्टर ने किया बेरला के विभिन्न कार्यालयों का औचक निरीक्षण

*रामपुर के गौठान में गोबर खरीदी की ली जानकारी

जोहार छत्तीसगढ़– बेमेतरा।

कलेक्टर जितेन्द्र कुमार शुक्ला ने आज सोमवार को बेरला प्रवास के दौरान विभिन्न कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया। इनमें अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कार्यालय, तहसील कार्यालय, उप पंजीयक, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक, शासकीय उचित मूल्य की दुकान, स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल एवं रामपुर (भांड़) का गौठान शामिल है। कलेक्टर ने अनुविभागीय अधिकारी एवं तहसील कार्यालय के निरीक्षण के दौरान लंबित राजस्व प्रकरणों के निराकरण की स्थिति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होने नामंतरण, बंटवारा, फौती के प्रकरण, सीमांकन, आदि के लंबित प्रकरणों के शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए। ई-कोर्ट में एक वर्ष से अधिक अवधि वाले प्रकरणो का निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होने कार्यालयीन स्टॉफ को समय पर ड्यूटी आने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल में बच्चों के पठन-पाठन, गणवेश, शिक्षकों की उपस्थिति की जानकारी ली। शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बेरला में कोविड-19 टीकाकरण का निरीक्षण किया। शासकीय उचित मूल्य की दुकान बेरला के निरीक्षण के दौरान स्टॉक पंजी का अवलोकन किया। पीडीएस दुकान में मूल्य सूची का प्रदर्शन, दस प्रकार के रजिस्टर का संधारण व सत्यापन तथा चावल के रख-रखाव को व्यवस्थित व सुरक्षित रखने हेतु निर्देश दिया गया। जिलाधीश ने ग्राम रामपुर स्थिति गौठान के निरीक्षण के दौरान गोबर खरीदी एवं उसके भुगतान की जानकारी ली। सरपंच एवं स्व-सहायता समूह के सदस्यों से गोठान के परिचालन के संबंध में परिचर्चा की। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बेरला संदीप ठाकुर एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

31 जुलाई तक होगा, पीएम फसल बीमा योजना में बीमा पंजीयन

जोहार छत्तीसगढ़– महासमुंद।

खेती-किसानी करने वालों के लिए अच्छी खबर है। मानसून के चलते बारिश से राज्य के कुछ ज़िलों में बाढ़ जैसे हालात हैं। बाढ़ की वजह से फसलों को नुकसान पहुंचा है। कुछ ज़िलों में पर्याप्त बारिश नहीं होने से किसान परेशान हैं।

इन हालातों में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) किसानों के बड़े काम की है। किसान प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में अपनी फसल का बीमा करवा कर आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में रजिस्ट्रेशन कराने की अंतिम तारीख 31 जुलाई है।

पीएमएफबीवाई में रजिस्ट्रेशन करना बहुत आसान है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसान आगामी 31 जुलाई तक प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अपनी खरीफ की फसलों का बीमा करवा सकते हैं। इसके लिए किसानों को नाम मात्र का प्रीमियम देना होगा। योजना को लेकर प्रशासन की ओर से किसानों को जागरूक किया जा रहा है। कृषि अधिकारियों ने बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत खरीफ फसलों के लिए 2 प्रतिशत कृषक प्रीमियम राशि निर्धारित है, जिसके अनुसार कृषक द्वारा देय प्रीमियम राशि 1100 रुपए धान सिंचित एवं 840 रुपए धान असिंचित हेतु प्रति हेक्टेयर की दर से देय होगा।

कलेक्टर निलेशकुमार क्षीरसागर ने बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत जिला में खरीफ मौसम की फसलों के लिए किसान आगामी 31 जुलाई तक बीमा करा सकते हैं।

योजना के तहत कोई भी किसान अपनी फसल का बीमा करा सकता है। उन्होंने बताया कि पहले बीमा कराने की योजना ऋणी व गैर ऋणी किसानों के लिए अलग-अलग निर्धारित थी। जिसके तहत बैंक से ऋण लेकर खेती करने वाले किसान का बैंक, स्वयं पैसा काटकर उनकी फसल का बीमा कर देते थे, लेकिन अब सरकार ने उन किसानों के लिए भी इसमें छूट प्रदान की है। अगर किसान ने अपने खेत में बोई वास्तविक फसल की जगह गलती से दूसरी अन्य फसल का बीमा हो गया या करा लिया है तो किसान संबंधित बैंक को फसल बदलने की सूचना 29 जुलाई तक अवश्य भेज दें ताकि बाद में बीमा क्लेम के समय किसी प्रकार की असुविधा का सामना ना करना पड़े।

उन्होंने जिले के किसानों से अपील करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के कई फायदे है। योजना के तहत प्राकृतिक आपदा से किसानों को होने वाले नुकसान जैसे आकाशीय बिजली, ओलावृष्टि, जलभराव व अन्य प्राकृतिक कारणों से होने वाले नुकसान के लिए बीमित फसल का मुआवजा दिया जाता है। फसल नुकसान होने पर 72 घंटों के भीतर किसान को कृषि एवं किसान कल्याण विभाग को निर्धारित प्रारूप में फसल खराब होने की सूचना देना आवश्यक है।

एक नजर

फिर पकड़ाया 9 किलो गांजा, कार-मोबाईल भी बरामद

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

ओडिशा से गांजा लेकर बलौदा बाजार जा रही कार सवार चार लोगों से पुलिस ने 9 किलो गांजा बरामद किया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ नारकोटिक्स एक्ट 20 (बी) के तहत कार्रवाई की है। मामला बसना थाना क्षेत्र के पदमपुर रोड श्री राम जानकी मंदिर के पास की है। पुलिस के मुताबिक उन्हें मुखबिर से सूचना मिली थी कि ओडिशा की ओर से आ रही जायलो क्रमांक सीजी 22 एबी 0292 में कुछ लोग गांजा लेकर आ रहे हैं। पुलिस ने सूचना पर पदमपुर रोड स्थित श्री राम जानकी मंदिर के पास घेराबंदी की और उक्त कार को रोक लिया और कार की जांच की। इस दौरान कार में सवार बलौदा बाजार सरसीवां निवासी जावेद खान 26, सत्यपाल चौहान 22, हलधर साहू 27 और हरी साहू के पास से 9 किलो गांजा बरामद किया। पुलिस ने आरोपियों से 1.80 लाख रूपए का गांजा, 8 लाख रूपए कीमत की कार और 15 हजार रूपए कीमत का 4 नग मोबाईल जब्त किया।

गोबर के बाद अब गौ मूत्र भी खरीदेगी- भूपेश सरकार

जोहार छत्तीसगढ़–महासमुंद।

गौ पालकों को गोबर के गौमूत्र में बॉयो फर्टिलाइजर और बॉयो इंसेक्टिसाइड तैयार किए जाते की समस्याओं, ग साथ अब गौ-मूत्र भी आय का जरिया होगा। 20 जुलाई से जिले की हैं। गौमूत्र में यूरिया सहित अनेक मिनरल और एन्जाइम्स भी होते है। शिकायतों का र दो गौठानों बम्हनी और बड़गांव से इसकी शुरूआत होगी। मुख्य फर्टिलाइजर के रूप में गौमूत्र इस्तेमाल से पौधों की ऊँचाई और जड़ महालेखाकार ले - कार्यपालन अधिकारी एस आलोक ने बताया कि अभी हाल दो गौठानों में गौमूत्र की खरीदी 20 जुलाई से की जाएगी। इसके लिए सभी जरूरी तैयारी और संबंधित कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया। गया है। उन्होंने कहा कि इससे पशुपालकों को काफी फायदा होगा। पशु चिकित्सा अधिकारी ने जानकारी में अच्छी वृद्धि होती है। ग्वालियर की पह मिट्टी में भी लाभकारी अदालत हो रही जीवाणु में वृद्धि होती है। में मानव भवन, गौसून फा. इसी भारत को छुपाए 16 जैविक कीटनाशक जबलपुर संभ बनाने में किया जीपीएफ से = जाएगा। राज्य में कई लिये इस अद जगहों पर जैव अपनी शिकाय कीटनाशक पहले से पासबुक एक देते हुए बताया कि जिले में लगभग 16 हजार से ज्यादा गौठानों में बनाए जा रहे हैं। लेकिन, अब इसे संगठित रूप दिया जा रहा है। उपस्थित हो मवेशी पंजीकृत हैं। उन्होंने बताया कि बिरकोनी में 1384 गौवंशी और गौमूत्र की खरीदी से पशुपालकों की आय में वृद्धि होगी और उनको ने जबलपु बड़गांव में 983 पशु हैं। उन्होंने बताया कि गौमूत्र में पाए जाने वाला आर्थिक स्थिति भी और बेहतर होगी। पशुपालकों को इससे फायदा कर्मचारियों यूरिया बहुत से कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करता है। गौमूत्र होगा। सरकार के इस कदम से गाय की बेहतर सुरक्षा होगी। पशुपालकों अदालत में गौठान समिति के जरिए खरीदा जाएगा। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार की भी आय बढ़ेगी।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत विभिन्न पदों की भर्ती हेतु दावा आपत्ति उपरांत मेरिट सूची प्रकाशित

जोहार छत्तीसगढ़–जशपुरनगर।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत विभिन्न पदों पर भर्ती हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किया गया था। उन्होंने बताया कि प्राप्त आवेदनों की पात्र.अपात्र अभ्यर्थियों की दावा आपत्ति उपरांत मेरिट सूची का प्रकाशन किया गया। जिसमें 13 पदों की भर्ती पूर्ण किया जा चुका है तथा स्टॉफ नर्स, एनआरसी, नर्सिंग आईसीयू, एएनएम, एएनएम आरबीएसकेए सिक्योरिटी गार्ड में तकनीकी त्रुटियों के कारण उक्त 5 पदों हेतु अभ्यर्थियों के दावा आपत्तियों को शामिल नहीं किया गया था। उन्होंने बताया कि पुन: दावा आपत्ति 09 जून 2022 तक आवेदन आमंत्रित किया गया। जिसका द्वितीय दावा आपत्ति निराकरण पश्चात् पात्र-अपात्र तथा मेरिट सूची का प्रकाशन कर जिले के वेबसाइट में अपलोड किया गया है। अभ्यर्थी उक्त सूची का अवलोकन पर कर सकते है।

जिले में 375.2 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज

रायगढ़। चालू वर्षा मौसम में रायगढ़ जिले में 18 जुलाई तक 375.2 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है। बीते 24 घंटे में जिले में 6.2 मिली मीटर औसत वर्षा हुई है। भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले के रायगढ़ तहसील में 455.5 मिली मीटर, पुसौर में 502, खरसिया में 341.7, सारंगढ़ में 570.7, बरमकेला में 394.1, घरघोड़ा में 292, तमनार में 440.1, लैलूंगा में 295.8, धरमजयगढ़ में 263.1, सरिया 275.1 एवं छाल तहसील में 297 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है।

हमर गांव हमर पानी हमर मिट्टी के तहत जल संरक्षण हेतु ग्रामीणों को दिया जा प्रशिक्षण

जोहार छत्तीसगढ़–जशपुर।

कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल के निर्देशन में जिले में जल सरंक्षण व संचयन हेतु आम नागरिकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज जनपद पंचायत दुलदुला के ग्राम पंचायत सिमड़ा एवं मनोरा के घाघरा पंचायत में हमर गांव हमर पानी हमर मिट्टी के अंतर्गत जल संरक्षण एवं संवर्धन हेतु ग्रामीणों को वर्षा जल के बचाव के लिए आवश्यक जानकारी व प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस अवसर पर संबंधित सीईओ जनपद तकनीकी सहायक व ग्रामीण उपस्थित थे। प्रशिक्षण में ग्रामीणों को भू जल स्तर बढ़ाने के लिए जल बचाव हेतु कंटूर ट्रेंच निर्माण व मिट्टी के क्षरण से रोकने के लिए वृक्षारोपण की जानकारी प्रदान की गई। साथ ही आवश्यक स्थानों पर बोल्डर चेकडेमए गली प्लग, ब्रशहुड, गेबियन एवं परकुलेशन टैंक जैसी संरचनाओं की उपयोगिता को समझाया गया। जिससे की गांव का पानी, गांव का ही भू जल स्तर बढ़ाए तथा मिट्टी के कटाव को रोका जा सके।

कबीर बेदी की चौथी पत्नी को देख छूट जाएंगे पसीने, बेटी से है 5 साल छोटी

एक्टर कबीर बेदी ने बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक की फिल्मो में काम किया है. बता दे की एक्टर 76 साल के हो चुके है. कबीर बेदी बॉलीवुड में ज्यादातर विलन का रोल निभाते थे. कबीर बेदी की ने चार शादी की थी. बता दे की कबीर बेदी की चौथी पत्नी परवीन दोसांझ की उम्र 45 साल है. परवीन के साथ करीब 10 साल तक लिव इन रिलेशनशिप में रहने के बाद एक्टर ने शादी की थी. कबीर बेदी ने 1971 से फिल्मी दुनिया का सफर शुरू किया था. एक्टर की पहली शादी 1969 में डांसर प्रोतिमा से हुई थी, उन्हें पहली शादी से दो बच्चे हैं-बेटी पूजा और बेटा सिद्धार्थ. कबीर बेदी की पहली पत्नी की मौत एक हादसे में हो गई थी. इसके बाद एक्टर का नाम एक्ट्रेस परवीन बॉबी के साथ भी जुड़ा. एक्टर परवीन के साथ बॉलीवुड से हॉलीवुड भी पहुंचे, लेकिन दोनों का रिश्ता लंबे समय तक नहीं चल पाया. परवीन बॉबी के बाद एक्टर कबीर बेदी ने ब्रिटिश फैशन डिजाइनर सुसैन हम्फ्रेस से शादी की. दोनों का एक बेटा भी हुआ. कबीर बेदी और उकी पत्नी सुसैन का रिश्ता भी लंबे समय तक नहीं चल सका और दोनों का तलाक हो गया. कबीर बेदी ने दूसरे तलाक के बाद 1990 में तीसरी शादी टीवी और रेडियो प्रेजेंटर निक्की से रचाई. कबीर की यह शादी भी लंबे समय तक नहीं चल पाई और दोनों ने 2005 में अलग होने का फैसला ले लिया. कबीर बेदी ने चौथी शादी परवीन दोसांझ से की, एक्टर ने अपने 70वें जन्मदिन से एक दिन पहले गर्लफ्रेंड से शादी की थी।

नताशा सूरी ने आगामी फिल्म टिप्सी में अपने किरदार के बारे में की बात

पूर्व फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड नताशा सूरी दीपक तिजोरी की फिल्म टिप्सी में नजर आने वाली हैं। वह फिल्म में अपनी भूमिका के बारे में बात करती है जिसमें कायनात अरोड़ा, सोनिया बिरजे, अलंकृता सहाय और नाजिया हुसैन भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। नताशा कहती हैं, यह पूरी तरह से मनोरंजक है और मुझे इसमें तान्या का किरदार निभाना अच्छा लगा। हंसी और पागलपन के साथ, यह महिला मित्रता के भावनात्मक पहलुओं की भी पड़ताल करती है। नताशा ने अभिनेता के रूप में 2016 में मलयालम फिल्म किंग लियर से डेब्यू किया था। उन्हें आखिरी बार बिपाशा बसु और करण सिंह ग्रोवर अभिनीत डेंजरस में देखा गया था। अभिनेत्री का कहना है कि उन्हें स्क्रिप्ट पसंद आई और इसलिए इस अवसर को स्वीकार करने में उन्हें कोई समय नहीं लगा। उन्होंने कहा, मुझे स्क्रिप्ट पसंद आई और मुझे इसमें कास्ट होने के अवसर का लाभ उठाने में समय नहीं लगा। दर्शकों को फिल्म और इसकी युवा और मजेदार कंटेंट का आनंद मिलेगा। मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म स्क्रीन पर अच्छा प्रदर्शन करेगी और प्रभाव छोड़ेगी। दीपक तिजोरी द्वारा निर्देशित, यह फिल्म पांच लड़कियों के इर्द-गिर्द घूमती है, जो गोवा की बैचलरेट यात्रा पर जाती हैं। यह सितंबर में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है।

साजिद नाडियाडवाला की फिल्म में काम करेंगे कार्तिक आर्यन!

बॉलीवुड अभिनेता कार्तिक आर्यन फिल्मकार साजिद नाडियाडवाला की फिल्म में काम करते नजर आ सकते हैं। कार्तिक आर्यन इन दिनों अपनी फिल्म भूल भुलैया 2 को बॉक्स ऑफिस पर मिली शानदार सफलता के बाद से लगातार चर्चा में बने हुए हैं। भूल भुलैया 2 को मिली शानदार सफलता के बाद कई प्रोडक्शन हाउस से उन्हें फिल्मों के ऑफर्स भी आ रहे हैं।इसी बीच कार्तिक को साजिद नाडियाडवाला के ऑफिस के बाहर देखा गया है, जिसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो के सामने आने के बाद से चर्चा हो रही है कि कार्तिक जल्द ही साजिद नाडियाडवाला के किसी बड़े प्रोजेक्ट में नजर आ सकते हैं।

आलिया भट्ट ने 'हार्ट ऑफ स्टोन' की शूटिंग पूरी की

बॉलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट ने अपनी आने वाली हॉलीवुड फिल्म 'हार्ट ऑफ स्टोन' की शूटिंग पूरी कर ली है। आलिया भट्ट फिल्म हार्ट ऑफ स्टोन से हॉलीवुड में डेब्यू कर रही है।हार्ट ऑफ स्टोन में आलिया भट्ट के साथ गैल गैडोट और जेमी डोर्नन की भी अहम भूमिका है। आलिया ने इस फिल्म की शूटिंग पूरी कर ली है। बताया जा रहा है कि इस हॉलीवुड फिल्म में आलिया धमाकेदार एक्शन से भरपूर सीन्स करती हुई दिखाई देंगी।आलिया ने अपने सोशल मीडिया पर गैल गेडोट और क्रू के साथ कुछ फोटोज शेयर की है। आलिया ने फोटो शेयर करते हुए कैप्शन लिखा, हार्ट ऑफ स्टोन- तुम मेरे दिल में हो। खूबसूरत गैल गेडोट और मेरे निर्देशक टॉम हार्पर को थैंक्यू। जेमी डोर्नन आज आपको बहुत मिस किया और फिल्म की सारी टीम को थैंक्यू मुझे इतना अच्छा एक्सपीरियंस देने के लिए। मैं हमेशा आपके प्यार और केयर के प्रति शुक्रगुजार रहूंगी जो आप सबने मुझे दिया। अब बस फिल्म देखने का इंतजार कर रही हूं। लेकिन अबज्मैं घर आ रही हूं बेबी। फोटो में आलिया समुद्र के किनारे गैल को हग करते हुए नजर आ रही हैं। दूसरे फोटो में आलिया ,क्रू मेंबर्स के साथ दिख रही हैं। पोस्ट पर रिएक्ट करते हुए गैल ने लिखा, 'हम आपको मिस कर रहे हैं।'गैल ने अपनी सोशल मीडिया स्टोरी पर आलिया के साथ वही फोटो शेयर की और लिखा, 'बहुत प्यारज्इस प्यारी सी लड़की आलिया को, जिसने हॉर्ट ऑफ स्टोन फिल्म का रैपअप कर दिया।

खेल

10 सेकंड में 100 मीटर दौड़कर वर्ल्ड चैंपियन बनीं प्रेसी, टूर्नामेंट में पहली बार डबल क्लीन स्वीप

विमेन के तीनों मेडल जमैकन ने जीते, मेंस पर अमेरिकन का कब्जा

जितनी देर में आपने इस खबर की स्लग, हेडलाइन और टैग लाइन पढ़ी है उतनी देर में जमैका की स्प्रिंटर शैली एना फ्रेसर प्रेसी (10.67 सेकंड) ने वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 100 मीटर की दूरी तय कर ली थी।

वे सोमवार को फर्राटा दौड़ की वर्ल्ड चैंपियन बन गईं। यहां जमैक की रनर्स ने (गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज) तीनों मेडल जीते हैं। एक दिन पहले मेंस कैटेगरी की 100 मीटर रेस में भी ऐसा ही हुआ था। रविवार को अमेरिकन रनर्स ने गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज जीते थे।

वर्ल्ड चैंपियनशिप के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब 100 मीटर रेस की (मेंस और विमेंस कैटेगरी) क्लीन स्वीप हुआ

हो। इससे पहले 1991 और 1983 के सीजन की मेंस कैटेगरी के धावकों ने क्लीन स्वीप किया था। दोनों ही बार अमेरिकन ने तीनों मेडल जीते थे। लेकिन उन सीजन के विमेन रेस के मेडल अलग-अलग देशों को मिले थे। विमेंस में पहली बार किसी देश ने क्लीन स्वीप किया है। जमैका की शैली एना फ्रेसर प्रेसी दुनिया की फास्टेस्ट विमेन रेसर बनी हैं। उन्होंने वर्ल्ड चैंपियनशिप की बेस्ट टाइमिंग निकाली है। प्रेसी इस मंच पर 2009, 2013, 2015 और 2019 में चैंपियन बन चुकी हैं। इस सीजन के सिल्वर और ब्रॉन्ज क्रमशः शिरिका जैक्सन (10.67 सेकंड) और एलीन थॉमसन हेराह (10.81 सेकंड) ने जीते हैं। एक दिन पहले अमेरिकी एथलीट फ्रेड केर्ली दुनिया के सबसे तेज इंसान बने थे। उन्होंने वर्ल्ड एथलेटिक्स में 100 मी. रेस 9.86 सेकंड में पूरी की और गोल्ड जीता। 27 साल के केर्ली का यह वर्ल्ड चैंपियनशिप में पहला इंडिविजुअल गोल्ड है। वे पहली बार 100 मी. वर्ल्ड चैंपियन बने। इस इवेंट में अमेरिका ने क्लीन स्वीप किया। मार्विन ब्रेसी (9.88 सेकंड) ने सिल्वर और ट्रेवन ब्रोमेल (9.88 सेकंड) ने ब्रॉन्ज जीता। 1991 के बाद पहला मौका है, जब वर्ल्ड 100 मी. के तीनों मेडल किसी एक ही देश ने जीते। इस बीच, भारत के लॉन्ग जंपर मुरली श्रीशंकर (7.96 मी.) फाइनल में 7वें पर रहे।

तमीम इकबाल ने T-20I क्रिकेट को कहा अलविदा

15 साल के करियर का हुआ अंत, वनडे और टेस्ट क्रिकेट खेलते रहेंगे

गुयाना। बांग्लादेश के स्टार बल्लेबाज तमीम इकबाल ने टी-20 इंटरनेशनल से संन्यास ले लिया है। बांग्लादेश की वनडे टीम के कप्तान ने वेस्टइंडीज को 3 मैचों की सीरीज में उसके घर में 3-0 से हराने के बाद रविवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट कर अपने संन्यास की घोषणा की। 33 साल के इस टॉप ऑर्डर बल्लेबाज ने रविवार को पोस्ट करते हुए लिखा कि मुझे आज से टी-20 इंटरनेशनल से रिटायर समझा जाए। सभी को धन्यवाद। इसी के साथ उनके 15 साल के T-20 करियर का अंत हो गया। उन्होंने 2007 में केन्या के खिलाफ डेब्यू किया था। तमीम वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुने गए थे। उन्होंने तीन मुकाबलों में 117 रन बनाए। इसमें एक फिफ्टी शामिल है। तमीम ने इस साल जनवरी में इसी प्रारूप से ब्रेक लिया था। उन्होंने उस समय कहा था कि मैं टी-20 इंटरनेशनल से 6 महीने का ब्रेक लेने जा रहा हूं। मेरा पूरा ध्यान टेस्ट और वनडे पर होगा। हम विश्व टेस्ट चैंपियनशिप और 2023 विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने की तैयारी कर रहे हैं।

एक नजर

अगस्त में खेली जाएगी केएससीए की नई टी20 प्रतियोगिता

बेंगलुरु । तीन साल पहले भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना करने और कोरोना महामारी झेलने के बाद कर्नाटका राज्य क्रिकेट एसोसिएशन (केएससीए) अगले महीने अपने टी20 टूर्नामेंट को फिर से शुरू करने जा रहा है। कर्नाटका प्रीमियर लीग (केपीएल) नाम से खेला जाने वाले यह टूर्नामेंट अब महाराजा ट्रॉफ़ी टी20 के नाम से जाना जाएगा। इसके अलावा केएससीए ने छह टीमों के इस टूर्नामेंट के आयोजन के लिए कई बदलाव किए हैं।

फ्रैंचाइज़ी प्रणाली को हटाकर एसोसिएशन प्लेयर ड्राफ़्ट, भुगतान से लेकर कोच और स्टाफ़ की नियुक्ति तक क्रिकेट के सभी पहलुओं को संभालेगा। हालांकि बोर्ड ने सभी छह टीमों के लिए प्रायोजकों के साथ करार किया है। प्रतियोगिता का नौवां संस्करण 7 से 26 अगस्त के बीच बेंगलुरु और मैसूर में खेला जाएगा।

मुख्य रूप से केएससीए ने देश के कर कानूनों को ध्यान में रखते हुए यह बदलाव किया है। सचिव संतोष मेनन ने कहा, फ्रैंचाइज़ी प्रणाली के साथ आगे बढ़ने से एसोसिएशन को कर के रूप में अपने राजस्व का बड़ा हिस्सा देना पड़ता क्योंकि इसे अर्जित आय के रूप में देखा जाता। इस नए फ़ॉर्मेट में, जहां सारा खर्च एसोसिएशन उठाएगा, कर के प्रतिशत में कटौती होगी। इसके अलावा, केएससीए ने बीसीसीआई द्वारा अनिवार्य सभी भ्रष्टाचार विरोधी प्रोटोकॉल का पालन करने की बात को दोहराया है।

3000 मीटर स्टीपलचेज़ फाइनल में साबले

यूजीन । भारत के अविनाश साबले ने विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के पहले दिन शनिवार को 3000 मीटर स्टीपलचेज़ फाइनल के लिये क्वालीफाई किया, जबकि मुरली श्रीशंकर ने लंबी कूद फाइनल में जगह बनायी।

साबले ने 8:18.75 के समय के साथ तीसरा स्थान हासिल कर फाइनल में जगह बनाई। तीन हीट में से प्रत्येक के शीर्ष तीन और अगले छह सबसे तेज खिलाड़ियों ने फाइनल में जगह बनाई, जो सोमवार (भारत में मंगलवार सुबह) को आयोजित किया जाएगा।

दोहा में फाइनल में पहुंचे 27 वर्षीय साबले वर्तमान में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक हैं। उन्होंने पिछले महीने रबात डायमंड लीग के फाइनल में 8.12.48 के साथ अपने ही पिछले राष्ट्रीय रिकॉर्ड (8.16.21) को तीन सेकंड से मात दी थी।

साबले ने आठवीं बार पुरुषों की 3000 मीटर स्टीपलचेज़ में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा था। उन्होंने पहली बार 2018 में गोपाल सैनी द्वारा निर्धारित 8.30.88 के 37 वर्षीय रिकॉर्ड को अंतर राज्य चैंपियनशिप में 8.29.80 के समय के साथ तोड़ा था।

जडेजा 4 गेंद में दो बार बने सुपर मैन

बाउंड्री से 1 इंच की दूरी पर लिविंगस्टोन का कैच लपका फिर स्लाइड मारी और बटलर आउट

भारत और इंग्लैंड के बीच रविवार को मैनचेस्टर में खेले गए तीसरे वनडे मैच में रवींद्र जडेजा ने अपनी फील्डिंग से सबका दिल जीत लिया। उन्होंने एक बार फिर साबित किया कि आखिरी क्यों वो दुनिया के सबसे बेहतरीन फील्डर हैं। जडेजा ने हार्दिक पंड्या के एक ही ओवर में पहले लियाम लिविंगस्टोन और उसके बाद जोस बटलर का कैच पकड़कर उन्हें पवेलियन भेजा।

37वें ओवर में छा गए सर जडेजा

इंग्लैंड की पारी के 37वें ओवर में हार्दिक पंड्या गेंदबाजी कर रहे थे। ओवर की तीसरी गेंद पर जडेजा ने लियाम लिविंगस्टोन का

डीप स्क्वायर लेग पर कमाल का कैच लपका। वो बाउंड्री से सिर्फ एक कदम दूर थे। इस दौरान उनका बैलेंस भी बिगड़ा। लगा कि पैर बाउंड्री को टच कर जाएगा, लेकिन उन्होंने अपने को संभालते हुए शानदार कैच लिया। खुद हार्दिक भी हक्के-बक्के रह गए। लिविंगस्टोन 27 रन बना कर आउट हुए। इसी ओवर की आखिरी गेंद पर एक बार फिर जडेजा ने धमाकेदार कैच पकड़ा। जोस बटलर पूरी तरह से सेट होकर खेल रहे थे।

बाबर आजम ने तोड़ा कोहली-गावास्कर का रिकॉर्ड

इंटरनेशनल क्रिकेट में एशिया के सबसे तेज 10 हजार रन बनाने वाले खिलाड़ी बने, पहली पारी में बनाये शतक

पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने पूर्व भारतीय कप्तान विराट कोहली का एक और रिकॉर्ड तोड़ दिया है। वे तीन फॉर्मेट में एशिया के सबसे तेज 10 हजार रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। आजम ने यह उपलब्धि 228 में पारियों में हासिल की है। जबकि विराट ने 232 पारियों में 10 हजार पूरे किए थे। वहीं सुनील गावस्कर ने 243 पारियों में इस उपलब्धि को हासिल की थी। अगर वर्ल्ड की बात की जाए तो वेस्टइंडीज के पूर्व महान बल्लेबाज विवियन रिचर्ड्स का नाम सबसे ऊपर आता है। उन्होंने 206 पारियों में यह मुकाम हासिल किया था। वहीं, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर हाशिम अमला (217

पारियां), वेस्टइंडीज के ब्रायन लारा (220 पारियां) और जो रूट (222 पारियां) का नंबर रिचर्ड्स के बाद आता है।

बाबर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 10 हजार रन पूरे करने वाले 11वें पाकिस्तानी बल्लेबाज हैं। हालांकि, वह ऐसा करने वाले सबसे तेज पाकिस्तानी बल्लेबाज बन गए हैं। बाबर से पहले जावेद मियांदाद ने 248 पारियों में यह मुकाम हासिल किया था।

छत्तीसगढ़ पिछड़ा वर्ग कांग्रेस के पदाधिकारियों का प्रदेश स्तरीय सम्मेलन राजीव भवन रायपुर में संपन्न

जोहार छत्तीसगढ़-रायपुर।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पिछड़ा वर्ग विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैप्टन अजय सिंह यादव के आतिथ्य में एवं प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ पिछड़ा वर्ग कांग्रेस के पदाधिकारियों का प्रदेश स्तरीय सम्मेलन राजीव भवन रायपुर में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया एवं राज्य गीत अरपा पैरी के धार का गायन समस्त अतिथियों एवं पदाधिकारियों के द्वारा किया गया। तत्पश्चात प्रदेशाध्यक्ष डॉक्टर चौलेशलेश्वर चंद्राकर ने अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में साढे 3 साल के कार्यकाल में कांग्रेस सरकार की नीतियों योजनाओं ने प्रदेश की जनता का सरकार पर पुन: विश्वास स्थापित किया है। जनता कांग्रेस सरकार की नीतियों योजनाओं एवं कार्यों से प्रभावित होकर सरकार से बहुत उम्मीदें लगाने लग गई है। निसंदेह माननीय मुख्यमंत्री की सोच एवं कांग्रेस सरकार के कार्यों ने प्रदेश भर के समस्त समुदायों के जनता का जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का कार्य किया है। लोगों के पास उनकी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार आय एवं नियोजन के अवसर उपलब्ध कराने में सरकार की नीतियों मील का पत्थर साबित हुई है। आज प्रदेश में न सिर्फलोग संपन्न हुए बल्कि भीषण कोविड महामारी के बाद भी छत्तीसगढ़ में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। बस्तर के अबूझमाड़ के जंगल जिसे नक्सलियों के गढ़ कहकर अलंकृत कर पूर्व की भाजपा सरकार विकास से कोसों दूर रखी। वहीं माननीय भूपेश बघेल की सरकार में अबूझमाड़ में पीडीएफ की राशन दुकानें खुल चुकी है स्वास्थ्य विभाग की टीम घर पहुंच स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान कर रही हैं। कलेक्टर एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारियों का लगातार क्षेत्र में दौरा हो रहे हैं। यहां तक कि जिन्हें नक्सली कह कर प्रताड़ित किया जाता था वह प्रदेश की पुलिस विभाग में भर्ती हो प्रदेश की मुख्य सुरक्षा के कार्य करने लग गए हैं । अगला उद्बोधन पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष थानेश्वर साहू जी ने प्रदेश में पिछड़ा वर्ग के विकास एवं कल्याण हेतु माननीय मुख्यमंत्री बघेल के समक्ष शासन में पिछड़ा विभाग का गठन एवं पिछड़ा वर्ग समुदाय के जनगणना का कार्य शीघ्र अति शीघ्र करने की मांग रखी जिससे वैधानिक तौर पर प्रदेश में जनसंख्या घनत्व के अनुसार उनको उचित आरक्षण प्रदान किया जा सके।

अगले उद्बोधन में मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि जो पिछड़ों की बात करेगा वहीं प्रदेश में राज करेगा मुख्यमंत्री के नेतृत्व में पिछड़ा वर्ग समुदाय के हितों एवं अधिकारों को दिलाने के लिए बहुत से कार्य किए गए हैं। एवं लगातार किए भी जा रहे हैं हम गौरवान्वित हैं कि हमारे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी पिछड़ा वर्ग समुदाय से आते हैं। हमारे मुख्यमंत्री प्रदेश के ही नहीं वरन पूरे देश के सबसे चुस्त.दुरुस्त मुख्यमंत्री हैं। यदि किसी को मुख्यमंत्री जी से मुकाबला करना है तो उनकी तरह नदी में छलांग लगाकर दिखाएं एभंवरा बाटी एवं गेडी में चढ़कर दिखाएं और नहीं तो सोटा खाकर दिखाएं । हमारे मुख्यमंत्री जी की वजह से पिछड़ा वर्ग समुदाय की यह विशाल जनसमूह दिखाई दे रही है । पिछड़ा वर्ग समुदाय संगठित हो रही है और आगे भी संगठित होकर माननीय भूपेश बघेल के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनाते रहेंगे। अपने उद्बोधन में पूर्व सांसद छाया वर्मा एवं कृषि बोर्ड के अध्यक्ष महेंद्र चंद्राकर ने पिछड़ा वर्ग समुदाय को संगठित कर शासन की योजनाओं का प्रदेश की जनता को ज्यादा से ज्यादा लाभ दिलाने हेतु पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को सुझाव देते हुए कार्यकर्ताओं में उर्जा फूंक दिया। तत्पश्चात भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पिछड़ा वर्ग विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैप्टन अजय सिंह यादव जी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी पहले ऐसे मुख्यमंत्री हुए हैं जिन्होंने कवांटिफायेबल डाटा आयोग का गठन कर पिछड़ा वर्ग समुदाय के जनगणना कर कार्य करा रहे हैं। जिससे कि पिछड़ा वर्ग के आरक्षण का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं को पिछड़ा वर्ग समुदाय के बताते हैं और इस नाम पर जनता से वोट मांगते हैं और दूसरी तरफ पिछड़ा वर्ग समुदाय को ही छलने का कार्य करते हैं । वर्ष 2021 में ही जनगणना का ड्यू डेट था जो कि कब का बित चुका है पर वे जनगणना का कार्य नहीं करा रहे है। दूसरी ओर केंद्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग का काम उन्होंने रोक रखा है। केंद्रीय भाजपा सरकार पिछड़ा वर्ग समुदाय को गुमराह करते हुए हिंदू मुस्लिम को आपस में लड़ाने का कार्य करती है। राजस्थान में जिस व्यक्ति ने हिंदू युवक का कत्ल किया उनके तार भाजपा से जुड़े हुवे निकलेए अमरनाथ यात्रियों पर हमला करने वाला भी भाजपा का सक्रिय कार्यकर्ता निकला, महाराष्ट्र में व्यवसाई का हत्यारा भी भाजपा कार्यकर्ता निकला एवं उनके बड़े नेताओं के संपर्क में पाया गया। भाजपा के बड़े नेताओं के बच्चे जो विदेशों में पढ़ाई करते हैं और वह आम नागरिकों के बच्चे को दंगाइयों उपद्रवी बनाते का कार्य करते हैं। हमें भाजपा और आर एस एस से सचेत रहना है एवं संगठित रहना है भाजपा को हमारी संगठन से खतरा महसूस होने लगा है इसलिए वे देश को खतरा है बोलकर झूठा राग अलापा रहते हैं। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भाजपा के दूषित मंसूबों को छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान में कामयाब नहीं होने दिया।

अंत में प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपना उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि कांग्रेस जनता को सिर्फ देने का काम करती है 25 रुपए क्विंटल धान की कीमत दिया। भूमि हिन कृषि मजदूरों को 7000 रुपए वार्षिक आर्थिक सहायता दीए किसानों का कर्ज माफ किया। इसके उल्टे भाजपा पेट्रोल एडीजल, गैस आदि के कीमत बढ़ाकर जनता को लूटने का कार्य करती है । हमने जन सरोकार एवं जन भावनाओं को ध्यान में रखकर व्यक्ति के विकास हेतु कार्य किया और जहां भी कांग्रेसी सरकार होती है वही कार्य करती है। हमारी कांग्रेसी सरकार सिर्फ एक वर्ग के लिए नहीं बल्कि समस्त वर्गों के लिए विकास का कार्य किया और उनके जीवन को सरल बनाने का किया है। कांग्रेस की सरकार सभी को एक नजर से देखती है हमारी सरकार की साढे तीन वर्षों की कार्यकाल में हमने किसानों को समृद्ध बनाया व्यापारियों के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया। विकास एवं उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।

एक नजर

हर घर हरियाली अभियान

जिले में एक ही दिन में लगभग साढ़े तीन लाख पौधे रोपे गए

रायपुर । जिला प्रशासन की महत्वाकांक्षी पहल हर घर हरियाली अभियान में जिलेवासियों ने बढ़-चढ़कर अपनी सक्रिय सहभागिता निभायी है। आज रायपुर जिले के सभी शहरी और ग्रामीण इलाकों में लोगों ने अपने घरों, खेतों, खाली जमीन पर बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया। जिले में इस अभियान के तहत एक ही दिन में तीन लाख पचास हजार से अधिक पौधे रोपे गये। कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर भूरे की इस पर्यावरण हितैषी पहल में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के साथ राज्य सरकार के मंत्रियों, अधिकारियों और विधानसभा के सदस्यों सहित सभी जनप्रतिनिधियों ने भी सक्रिय योगदान दिया। भूपेश बघेल ने आज सीएम हाउस में रूद्राक्ष का पौधा लगाया। वहीं सभी मंत्रियों ने भी अपने-अपने आवास में पौध रोपण किया। कलेक्टर डॉ.सर्वेश्वर भूरे ने सपत्निक अपने कचना स्थित आवास में पौधा लगाया। इसके बाद उन्होंने कार्यालय पहुंचकर प्रशासन की टीम के साथ कलेक्टोरेट परिसर में भी वृक्षारोपण किया। नगर निगम आयुक्त सहित जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, वन विभाग के अधिकारियों और अन्य विभागीय अधिकारियों ने भी अपने-अपने कार्यालयों में पौधे लगाए।

जिले में आज से शुरू हुई ई-जनचौपाल कलेक्टर को दिया ग्रामीणों ने धन्यवाद

कौशिल्या बाई को मिला तत्काल राशन कार्ड

कांकेर । जिले में आज सोमवार से ई-जनचौपाल शुरू हो गया है। दूरस्थ अंचलों के ग्रामीण अपने क्षेत्र के जनपद पंचायत कार्यालय के वीडियो कान्फ्रेंसिंग कक्ष में उपस्थित होकर कलेक्टर डॉ. प्रियंका शुक्ला एवं एसपी शलभ कुमार सिन्हा को वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से अपनी समस्याओं से अवगत कराया, जिसे गंभीरता से सुनकर समस्याओं निराकरण के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों एवं एसडीएम को निर्देशित किया गया। ऐसे प्रकरण जिनका तत्काल निराकरण हो सकता था, उनका फौरन निराकरण भी किया गया। ई-जनचौपाल शुरू होने पर सभी विकासखण्डों के आवेदकों ने कलेक्टर को धन्यवाद देते हुए कहा कि इससे उनके आने-जाने में होने वाला व्यय तथा समय की बचत होगी।

भानुप्रतापपुर विकासखण्ड के ग्राम कन्हारगांव निवासी कौशिल्या ने आज जनपद पंचायत भानुप्रतापपुर के वीडियो कान्फ्रेसिंग कक्ष में उपस्थित होकर कलेक्टर डॉ. प्रियंका शुक्ला को अपनी समस्या बताते हुए राशन कार्ड प्रदान करने के लिए अनुरोध किया। कलेक्टर द्वारा मौके पर उपस्थित खाद्य अधिकारी को इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया गया। आवेदक कौशिल्या से पूछने पर उन्होंने राशन कार्ड बनाने के लिए आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध होने की जानकारी दी। इस पर त्वरित कार्यवाही किया जाकर जनपद पंचायत भानुप्रतापपुर एवं खाद्य विभाग के समन्वय से आवेदक कौशिल्या को तत्काल राशन कार्ड प्रदान कर दिया गया।

एक जून से अब तक जिले में 629.6 मिली मीटर औसत वर्षा दर्ज

कांकेर । चालू मानसून के दौरान कांकेर जिले में 01 जून से अब तक 629.6 मिली मीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। बीती रात से जिले के सभी 07 तहसीलों में व्यापक वर्षा दर्ज की गई। सर्वाधिक वर्षा पखांजूर तहसील में 150.4 मिली मीटर और सबसे कम वर्षा 30.4 मिली मीटर कांकेर तहसील में दर्ज की गई है। कलेक्टर कार्यालय के भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार आज 18 जुलाई की स्थिति में भानुप्रतापपुर 53.6 मिली मीटर, दुर्गूकोंदल में 40.7 मिली मीटर, चारामा में 63.6 मिली मीटर, अंतागढ़ 39.4 मिली मीटर और नरहरपुर में 66.6 मिली मीटर औसत वर्षा अब तक दर्ज की गई है।

बरसते पानी में शिवनाथ नदी महमरा एनीकट का जायजा लेने पहुंचे आयुक्त

दुर्ग । लगातार हो रही बारिश से शिवनाथ नदी महमरा एनीकेट उफान पर है। शहर में इन दिनों लगातार मूसलाधार बारिश हो रही है जिसकी वजह से अधिकतर नदी नाले उफान पर है। सोमवार अलसुबह बरसते पानी में आयुक्त प्रकाश कुमार सर्वे ने शिवनाथ नदी महमरा एनीकट पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। उफनते शिवनाथ एनीकट के आस पास उपस्थित लोगो को देखकर आयुक्त ने समझाइस दी की शिवनाथ नदी का पानी एनीकट के 3 फिट ऊपर बह रहा है जो खतरा के निशान पर है। इस कारण लोगो को यह भी ध्यान रखना होगा कि किसी तरह की लापरवाही ना बरते। एनीकट पार न करें साथ ही उन्होंने तट पर नहाने वाले को भी वहां से हटाने को कहा। प्रकृति के नजारे देखने शहर के कई लोग पर्यटन स्थल पर लोग पहुंच रहे हैं।

नक्सलियों ने की मुखबिरी के आरोप में ग्रामीण की हत्या

सुकमा । जिले के भेज्जी थानाक्षेत्र अंतर्गत ग्राम बिराभट्टी में नक्सलियों ने रविवार की रात एक ग्रामीण मड़काम हांदा को उसके घर से उठाकर गांव से कुछ दूर ले जाकर धारदार हथियार से हत्या कर दी। आज सुबह नक्सली हत्या की जानकारी मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को अपने कब्जे में लेकर कार्यवाही करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। नक्सलियों के कोंटा एरिया कमेटी ने ने ग्रामीण मड़कम हंदा की हत्या करने के बाद एक पर्चा भी छोड़ा है। इस पर्चे में मृतक पर पुलिस मुखबिरी का आरोप लगाया है। साथ ही उन्होंने मृतक को इससे पूर्व भी पांच से सात बार मुखबिरी नही करने की चेतावनी देने का जिक्र किया है। हालांकि पुलिस के अधिकारियों ने मृतक के पुलिस मुखबिर होने से इनकार किया है। बस्तर आईजी सुन्दराज पी ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि घटना के संबंध में विस्तृत जांच की जा रही है।

स्कूलों के लगने और छुट्टी समय सम्बंधित मार्गों पर भारी वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाएं प्रशासन- जिलाध्यक्ष शैलेश मनहर

जोहार छत्तीसगढ़-रायगढ़।

सतनामी समाज छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिलाध्यक्ष शैलेश मनहर ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए रायगढ़ प्रशासन से आग्रह किया है कि रोड राजीव नगर से संजय मैदान होते हुए ढिमरापुर रोड तक के अंदरूनी रास्ते पर लगभग 6 से ज्यादा स्कूलों का संचालन होता है।

जिसमें हजारों बच्चे पढ़ाई करते हैं और रोज इस मार्ग से आना-जाना करते हैं। लेकिन इस रोड पर आए दिन रास्ते पर कहीं गिट्टी बालू को डम्प कर दिया जाता है तो कहीं चार पहिया वाहनों को रोड में खड़े कर दिया जाता हैए तो कहीं ट्रेलर को खड़े कर दिए रहते हैं। रहा.सहा कसर को जल आवर्धन योजना में पाइप लाइन बिछाने के लिए रोड किनारे खोदे गए गड्ढों से पूरा हो जाता है। स्कूलों के लगने और छुट्टियों के समय में भारी वाहनों के इस रास्ते पर घुसने के कारण स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को रास्ते से गुजरने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

आज भी रामभांठा क्षेत्र में स्कूल छुट्टी के समय फिर एक बार भारी वाहनों के रास्ते पर आने से बच्चों के साथ.साथ उनके परिजनों को निकलने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। रोड जाम हो गया था। यह किस्सा आए दिन इस मार्ग पर होते रहता है लेकिन इस विषय पर स्कूल प्रबंधन और ना ही शहर प्रशासन कोई ध्यान देना चाहते हैं। क्यों नहीं पर स्कूलों के प्रबंधक और शहर प्रशासन कोई व्यवस्था स्थापित करते जिससे कि स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों को कोई दिक्कत और हानि ना पहुँचे। क्या स्कूल प्रबंधन और प्रशासन किसी घटना का इंतजार कर रहे हैं। कि कोई अप्रिय घटना घटे तब इनकी निद्रा टूटे। मासूम बच्चों को कहां मालूम कि उनके लिए भी व्यवस्था बनाई जा सकती है। जिससे वे स्कूल सुगमता से आ जा सके। और बच्चों के पालकों में भी इतनी समझ समय नहीं कि वे इस विषय पर सभी स्कूलों के प्रबंधकों को बोल सके किए स्कूलों के लगने और छुट्टी के समय इस मार्ग पर भारी वाहनों और चार पहिया वाहनों को प्रवेश ना करने दिया जाए। बहरहाल मेरा काम है स्थिति को अपने माध्यम से सबके सामने लाने का और मैंने कर भी दिया है। बाकी प्रशासन और स्कूलों के प्रबंधकों के ऊपर है कि वे इस मुद्दे को कितनी गम्भीरता से लेते हैं।

त्रिलोक श्रीवास ने वार्ड क्रमांक 68 में 5 सीसी रोड का किया भूमिपूजन

जोहार छत्तीसगढ़-रतनपुर।

छत्तीसगढ़ में जब से भूपेश बघेल की सरकार बनी है तब से चहुमुखी विकास कार्य एवं जनकल्याणकारी योजनाएं जारी है, मुख्यमंत्री एवं सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के साथ साथ नगरीय निकाय क्षेत्रों में भी समन्वित रूप से विकास कार्य अनवरत रूप से कराए जा रहे हैं, यह उदगार कांग्रेस नेता त्रिलोक श्रीवास, मार्गदर्शक जिला पंचायत सदस्य जिला योजना समिति सदस्य, मार्गदर्शक, पार्षद वार्ड क्रमांक 68 ने वार्ड क्रमांक 68 स्वामी रामकृष्ण परमहंस नगर में छोटी कोनी में 4 सीसी रोड एवं बड़ी कोनी में एक रोड की भूमि पूजन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किया, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महापौर राम शरण यादव वरिष्ठ नागरिक व्यास नारायण पांडे कार्यक्रम की अध्यक्षता शेख नजरउद्दीन छोटे सभापति नगर निगम बिलासपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में एमआईसी मेंबर राजेश शुक्ला, अजय यादव पार्षद योगिता आनंद श्रीवास ,पंडित सुरेंद्र पांडे, राजाराम पटेल, आरती, जैक्सन एंथोनी, माला पिल्ले छोटी, प्रभा तिवारी, संतोष ध्रुव, रमेश पटेल, विनोद यादव, प्रमोद यादव, रामचरण गढ़वाल ऋषभ सोनी जोन कमिश्नर सती यादव इंजीनियर मीनू भगत करुण यादव अशोक श्रीवास सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

कोविड संक्रमण से बचने को सावधानी अब अधिक जरूरी, न बरतें लापरवाही - डॉ.रुपेंद्र पटेल

जोहार छत्तीसगढ़-रायगढ़।

जिले में कोविड19 का संक्रमण एक बार फिर से बढ़ने लगा है। जिसके मद्देनजर स्वास्थ्य विभाग ने सभी जिलावासियों से आवश्यक सावधानी बरतने की अपील की है। जिले के वरिष्ठ चिकित्सकों का मानना हैं कि कोविड संक्रमण से बचने के कोविड अनुरूप व्यवहारों का पालन जरूरी है। साथ ही दुसरे राज्यों से आ रहे लोगों को कोविड के लक्षण प्रतीत होने पर तुरंत जांच करानी चाहिए। स्वास्थ्य विभाग के जारी मीडिया बुलेटिन के अनुसार जिले में कोविड19 के सक्रिय मामलों की संख्या 125 पहुंच चुकी है और इस संख्या में प्रतिदिन बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में सभी को कोविड संक्रमण से बचने के लिए अधिक सावधानी बरतने की जरुरत है और किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए इस सम्बन्ध में अशर्फी देवी महिला चिकित्सालय के प्रमुख डॉ. रूपेंद्र पटेल ने बताया कोविड 19 से बचाव के के लिए मास्क का उपयोग, हाथों की स्वच्छता और 2 गज की दूरी जैसे नियमों का पालन करना आवश्यक है। साथ ही संक्रमण के बढ़ रहे मामलों को देखते हुए लोगों को अनावश्यक रुप से ज्यादा भीड़ वाली जगहों पर जाने से बचना चाहिए तथा सार्वजनिक स्थलों पर सरकारी कार्यालयों में व सार्वजनिक वाहनों में सफर के दौरान मास्क तथा सैनिटाइजर का उपयोग करना आवश्यक है और एक दूसरे से उचित दूरी बनाकर रखें। किसी भी प्रकार के जुकाम, खांसी, बुखार, बदन दर्द तथा सांस से संबंधित समस्या को हल्के में न लें तथा अपनी कोरोना जांच करवाएं। वरिष्ठ नागरिकों व पहले से गंभीर बीमारियों से ग्रस्त लोगों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

बूस्टर डोज जरूर लगवाएं-डॉ. रूपेंद्र पटेल

डॉ. रूपेंद्र पटेल ने आगे कहा कोविड19 महामारी का खतरा अभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है, इसलिए सावधानी बरतें। जिले के सभी 18 वर्ष से अधिक आयु के पात्र लोग कोविड वैक्सीन की बूस्टर डोज लगवाएं। सरकार द्वारा 15 जुलाई से बूस्टर डोज मुफ्त में लगाई जा रही है। जिसका जिला वासियों को भरपूर फायदा उठाना चाहिए और कोविड संक्रमण से अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। जिले में 10 लाख के करीब पात्र लोगों ने बूस्टर डोज नहीं लगवाया है, लेकिन अब जब सरकार कोविड संक्रमण को रोकने के लिए मुफ्त में बूस्टर डोज की व्यवस्था 30 सितंबर तक की है तो इस अवधि में टीकाकृत हो अपने और समाज को कोविड के खतरे से बचाएं।

करें अपने परिवार की रक्षा रू डॉ. योगेश पटेल

कोविड 19 के जिला सर्विलांस अधिकारी डॉ. योगेश पटेल ने लोगों से अपील की है ऐसे लोग जो किसी अन्य राज्य से जिले में प्रवेश कर रहे हैं वह एहतियातन अपना कोविड टेस्ट जरूर करवाएं। खासकर उन्हें तो अनिवार्य रूप से अपना कोविड टेस्ट करवाना चाहिए जो ऐसे राज्य से होकर आए हैं जहां कोविड के मामले अधिक हैं। ऐसे में आप अपने परिवार की हिफाजत कर सकते हैं। लापरवाही सभी को भारी पड़ सकती है। जिले के सभी सीएसचसी और पीएससी में आरटीपीसीआर टेस्ट की सुविधा मौजूद है। एंटीजन टेस्ट लगभग सभी स्वास्थ्य केंद्रों में उपलब्ध है। शहरी क्षेत्र के तीनों यूपीएचसी इंदिरानगर, रामभांठा और गांधीनगर में आरटीपीसीआर टेस्ट हो रहे हैं।

कलेक्टर ने दी थी हिदायत जांच में अनुपस्थित मिले सौ से अधिक अधिकारी-कर्मचारी

* जोहार छत्तीसगढ़-जांजगीर।

शासकीय कार्यालयों में अधिकारी कर्मचारियों की उपस्थिति समय पर सुनिश्चित करने कलेक्टर तारण प्रकाश सिन्हा ने यहाँ आते ही बैठक लेकर सभी को निर्देशित किया था। आज उनके निर्देश पर सयुंक्त कलेक्टर निशा नेताम मंडावी और एसडीएम जांजगीर नंदिनी कमलेश साहू, पामगढ़ बीएस मरकाम, तहसीलदार डभरा, चाम्पा, शिवरीनारायण, सक्ती ने शासकीय कार्यालयों में आकस्मिक निरीक्षण किया तो अनेक अधिकारी कर्मचारी कार्यालयीन समय पर भी दफ्तर नहीं पहुँचे थे। कुल 101 अधिकारी कर्मचारी अनुपस्थित पाये गये। सभी को नोटिस जारी कर वेतन काटने की कार्यवाही की जा रही है। कलेक्टर सिन्हा ने आखिरकार अपने दिए गए अल्टीमेटम पर अमल करना शुरू कर दिया है। आज वे प्रात:10 बजे ऑफिस पहुँचे। उन्होंने जिला कार्यालय से संयुक्त कलेक्टर और एसडीएम को निर्देशित किया कि अपने क्षेत्र के शासकीय कार्यालय में जाकर उपस्थिति की तत्काल जाँच करें और जो भी अनुपस्थित है, उनको कारण बताओं नोटिस जारी कर वेतन काटने की कार्यवाही करें। कलेक्टर के निर्देश पर एसडीएम पामगढ़ मरकाम ने जनपद पंचायत कार्यालय में स्थापना, एनआरएलएम शाखा, आवास शाखा, मनरेगा शाखा की उपस्थिति पंजी का 10.25 बजे आकस्मिक निरीक्षण किया। यहां अनुपस्थित 20 अधिकारी कर्मचारियों को नोटिस जारी करने सीईओ पामगढ़ को निर्देशित किया गया। पामगढ़ में विकास खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय का 10.40 बजे निरीक्षण के दौरान 5 और आईसीडीएस तथा बीआरसी में 1-1 अधिकारी कर्मचारी अनुपस्थित पाए गए। इसी तरह कलेक्टर सिन्हा के निर्देश पर सयुंक्त कलेक्टर ने जिला शिक्षा कार्यालय, सहायक आयुक्त आदिवासी विभाग कार्यालय, आबकारी विभाग, उप संचालक कृषि अनुविभागीय अधिकारी कृषि विभाग के कार्यालयों का सुबह 10 से 10.20 के बीच आकस्मिक निरीक्षण किया। जिसमें शिक्षा विभाग के 9 कर्मचारी, ट्राइबल विभाग में 4, कृषि विभाग में 8, आबकारी विभाग में 9 कर्मचारी-अधिकारी कार्यालयीन समय पर अनुपस्थित पाए गए। इसी तरह जांजगीर एसडीएम नंदिनी कमलेश साहू द्वारा शासकीय कार्यालयों का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। जिसमें शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खोखरा में व्याख्याता एल बी कुमारी कांति यादव, सीमा तिवारी, सहायक ग्रेड 2 एस के कश्यप, सहायक ग्रेड 3 एम आर बेग और पूर्व माध्यमिक शाला कचहरी चौक में प्रधान पाठक जयंती दुबे अनुपस्थित पायी गयी। इसी तरह कार्यालय उप संचालक खाद्य एवं औषधि प्रशासन का कार्यालय प्रात: 10.18 में बंद पाया गया। यहां सहायक औषधि नियंत्रक प्रीतम ओगरे, औषधि निरीक्षक सुनील सिंह परिहार, दुर्गेश कैवर्त्य, हितेन्द्र बाम्बोडे, प्रतिभा राजपुत, सुमनलता कवंर, नेहा मिंज, खाद्य सुरक्षा अधिकारी दीपक देवागंन, अर्पणा आर्या, नमूना सहायक शांतनु भट्टाचार्य, सरिता मरावी और सुलोचना कवंर सभी अनुपस्थित थे।

आगे भी जारी रहेगी कार्यवाही-कलेक्टर

कलेक्टर श्री सिन्हा जिले में शासकीय अधिकारियों की उपस्थिति मुख्यालय में सुनिश्चित करने के निर्देश लगातार दे रहे हैं। उन्होंने फील्ड के स्टाफ को भी मुख्यालय और कार्यालयों में रहने के निर्देश दिया हुआ है। इसी कड़ी में अब उन्होंने शासकीय कार्यालयों में अधिकारियों कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने जाँच के निर्देश दिए हैं। वे स्वयं भी समय पर अपने दफ्तर पहुँच रहे हैं और आने वाले दिनों में आकस्मिक निरीक्षण करने निकलेंगे। उन्होंने सभी अधिकारी.कर्मचारियों को निर्देशित किया है कि वे शासन द्वारा निर्धारित कार्यालयीन समय तक अनिवार्य रूप से कार्यालय में उपस्थित होकर शासकीय कामकाज करें। सोमवार को कार्यालय उपस्थिति के अलावा अन्य दिनों में आवश्यकता अनुसार फील्ड में भी कार्य करें। कलेक्टर ने कहा है कि आने वाले दिनों में भी यह कार्यवाही लगातार जारी रहेगी। मुख्यालय से बाहर आना-जाना नहीं चलेगा। स्कूलए स्वास्थ्य केंद्र, आंगनबाड़ी सहित सभी कार्यालयों में आकस्मिक निरीक्षण सुबह और शाम को किया जाएगा। अनुपस्थिति पर वेतन काटने के साथ विभागीय कार्यवाही भी सुनिश्चित की जाएगी।

बाढ़ नियंत्रण एवं आपदा प्रबंधन के लिए जिला स्तरीय नियंत्रण कक्ष स्थापित

बालोद । कलेक्टर डॉ गौरव कुमार सिंह के निर्देशानुसार बालोद जिले में बाढ़ नियंत्रण एवं आपदा प्रबंधन बचाव एवं राहत कार्य तथा दैवीय विपत्ति एवं प्राकृतिक आपदा की घटनाओं की त्वरित सूचनाओं के आदान कन्ट्रोल रूम की स्थापना की गई है। जिला स्तरीय आपदा नियंत्रण कक्ष कलेक्टोरे के कक्ष क्रमांक 04 में स्थापित की गई है। बाढ़ नियंत्रण एवं आपदा प्रबंधन के संबंध में जानकारी देने हेतु आपदा नियंत्रण कक्ष के दूरभाष क्रमांक 07749-223950 को सार्वजनिक कर दी गई है। बाढ़ एवं आपदा नियंत्रण के नोडल अधिकारी डिप्टी कलेक्टर अमित वास्तव का मोबाईल नं. 7987878157 एवं सहायक नोडल अधिकारी एस.के. भदोरिया उपअभियंता जलसंसाधन उपसंभाग क्रं. 01 आदमाबाद बालोद का मोबाईल नं. 9981235674 है । इसी तरह जिला सेनानी बालोद के बाढ़ नियंत्रण के प्रभारी अधिकारी देवप्रसाद साहू का मोबाईल नं. 9893155718 है। पुलिस विभाग के बाढ़ नियंत्रण कक्ष के प्रभारी उपपुलिस अधीक्षक राजेश बागड़े का मोबाईल न. 8103688111 है। इसके साथ ही जिला कार्यालय के कक्ष कंमाक 04 में स्थापित बाढ़ नियंत्रण कक्ष में अधिकारी कर्मचारियों की शिप्टवार ड्यूटी भी लगाई गई है।

विश्वास अभियान के तहत किलकिलेश्वर धाम में थाना प्रभारी मल्लिका बनर्जी ने महिलाओं को जागरूकता हेतु अभिव्यक्ति एप की जानकारी दी

जोहार छत्तीसगढ़-पत्थलगांव।

पुलिस अधीक्षक जशपुर डी. रविशंकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रतिभा पांडेय व अनुविभागीय अधिकारी पुलिस पत्थलगांव मयंक तिवारी के निर्दशानुसार थाना पत्थलगांव में मल्लिका तिवारी द्वारा ग्राम किलकीला में 17 जुलाई 22 जुलाई को श्सावन सोमवार के तहत आए श्रद्धालु जन को श्विश्वास अभियान एवं अभिव्यक्ति ऐप के तहत जनजागरूकता कार्यक्रम किया गया। और भी पढ़े खबरे भूपेश बघेल ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को लिखा पत्र कार्यक्रम में बच्चो को नशा उन्मूलन,एटीएम ठगी,बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,पुलिस और आम जनता के बीच की दूरी को दूर कर दोनों के मध्य अच्छे रिश्ते को मजबूती के लिए जोर दिया गया। इस दौरान साइबर अपराध एवं महिला संबंधी अपराध आदि विषयों पर जानकारी दी गई। थाना प्रभारी मल्लिका बनर्जी ने ट्रैफिक नियमों के बारे में भी जानकारी दी गई।

कलेक्टर ने लंबित राजस्व प्रकरणों को समय सीमा में पूर्ण करने के दिए निर्देश

बालोद । कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने कहा कि सभी लंबित राजस्व प्रकरणों का निराकरण समय-सीमा में सुनिश्चित करे। कलेक्टर डॉ. सिंह आज संयुक्त जिला कलेक्ट्रेट के सभा कक्ष में आयोजित समीक्षा बैठक में राजस्व विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए है। उन्होंने नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन,विवादित खाता विभाजन, डायवर्सन प्रकरण, डिजिटल हस्ताक्षर, खसरा सहित जाति, आय और निवास प्रमाण पत्र से संबंधित आवेदनों का निराकरण समय-सीमा में करने को कहा है। कलेक्टर ने राजस्व प्रकरणों के निराकरण में तेजी लाने तथा त्रुटि रहित ढंग से सभी राजस्व प्रकरणों का निराकरण करने को कहा है।

दीनदहाड़े भतीजे ने की अपनी ही चाची की सब्बल मारकर हत्या

क्षेत्र में मची सनसनी, देर रात आरोपी को रतनपुर पुलिस ने किया गिरफ्तार

जोहर छत्तीसगढ़-रतनपुर।

थाना क्षेत्र के अंतर्गत वार्ड क्र. 12 करैहापारा में नल मे पानी भरने नल के पास खड़ी सुरेखा पाटले पति जगदीस पाटले, उम्र 30 वर्ष की उसके ही सगे भतीजे ने सिर मे सब्बल से वार कर हत्या कर मौके से फरार हो गया है।मिली जानकारी के अनुसार वार्ड क्र.12 करैहापारा मे शाम 5,30 बजे के लगभग मृतिका सुरेखा पाटले पति स्व.जगदीश पाटले उम्र 30 वर्ष सार्वजनिक नल के पास पानी भर रही थी तभी रिस्ते मे भतीजे मुकेश उर्फ़ पिंटू पाटले पिता मोहित राम पाटले उम्र 24 वर्ष वहा पहुंचा और महिला से गाली गलौच करते हुए अपने पास रखे सब्बल से महिला के उपर ताबड़तोड़ हमला कर दिया जिससे महिला की घटनास्थल मे ही मौत हो गई। वही घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी मुकेश मौके से फरार हो गया है।

आस पास के लोगो की सूचना पर पहुंची रतनपुर पुलिस ने पंचनामा कार्यवाही के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए मरचूरी मे रखवा दिया है। शाम होने की वजह से पोस्टमार्टम आज नहीं हो पाया कल मंगलवार को सुबह किया जायेगा फिलहाल पुलिस मौक़े पर पहुंच हत्या मे प्रयुक्त सब्बल को जप्त कर आरोपी की तलाश मे जुट गई है।

परिजनों ने रतनपुर पुलिस पर लगाया गंभीर आरोप

मृतिकाके परिजनों ने मीडिया से बात करते हुए बताया की आरोपी मुकेश के खिलाफ 4 से 5 बार थाना में लिखित शिकायत की जा चुकी है, जो हमेशा मारपीट, धमकी, गाली गलौच करता था फिर भी रतनपुर पुलिस ने गंभीरता नहीं दिखाई जिसका खामियाजा आज एक महिला को अपनी जान देकर चुकाना पड़ा।मृतक भाई पक्ष महिला के परिवार वाले थाने आकर हंगामा करने लगे अपराधी को पकड़ने एवं करवा ही नहीं करने पर बात को लेकर गाली गलौज व पथराव करने लगे जिस पर स्टाफ मुंशी सत्येंद्र सिंह हाथ में चोट लगी तब स्टॉप बचाव करते लाठी से खदेड़ा मृतिका पति की मौत के बाद से अपने 3 बच्चों के साथ रहती थी, जिसकी मौत के बाद अब बच्चे बेसहारा हो गए है।

जनदर्शन में मिसल के लिए पैसे मांगने की शिकायत, कलेक्टर ने दिए कार्यवाही के निर्देश

जोहार छत्तीसगढ़-जांजगीर।

कलेक्टर जनदर्शन में कलेक्टर तारण प्रकाश सिन्हा द्वारा आम नागरिकों की समस्याएं सुनी गई। अलग अलग क्षेत्रों से आए लोगों ने कलेक्टर को आवेदन देकर उसके निराकरण की मांग की। जनदर्शन में जागरूक किसान महेन्द्र कुमार द्वारा कलेक्ट्रेट के कानूनगो में मुख्य लिपिक द्वारा मिसल सहित अन्य प्रकार के दस्तावेजों पर कार्यवाही हेतु प्रति मिसल 200 रूपये की मांगने की लिखित शिकायत कलेक्टर से की गई। कलेक्टर ने शिकायतकर्ता द्वारा शिकायत सामने लाने पर उनकी प्रशंसा करते हुए जांच कर कार्यवाही के निर्देश दिए हैं। कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जनदर्शन लेते हुए कलेक्टर सिन्हा ने यहां आए सभी लोगों की समस्याओं को सुनकर आवेदन लिए और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश भी दिए। जनदर्शन में कुल 117 आवेदन प्राप्त हुए जिसमें से अधिकांश आवेदन राजस्वए आर्थिक सहायताए पेंशन एवं व्यक्तिगत से संबंधित थे।

दिव्यांग धरमवीर को मिला मोटराइज्ड ट्रायसायकल

जनदर्शन में अपनी फरियाद लेकर पहुंचे ग्राम कमरीद, जनपद पंचायत बलौदा के निवासी धरमवीर सूर्यवंशी पिता स्वण् गजाधर प्रसाद सूर्यवंशी ने कलेक्टर से अपनी समस्या बताते हुए आवागमन के लिए मोटराइज्ड ट्रायसायकल की मांग की। कलेक्टर सिन्हा ने दिव्यांग धरमवीर के आवेदन पर तत्काल विचार करते हुए उप संचालक समाज कल्याण विभाग को निर्देशित किया कि धरमवीर को मोटराइज्ड ट्रायसायकल प्रदान की जाए। समाज कल्याण विभाग द्वारा दिव्यांग धरमवीर को मौके पर ही कलेक्टर सिन्हाए उप संचालक समाज कल्याण श्री टी पी भावे और के डिप्टी कलेक्टर सुमित गर्ग के हाथो मोटराइज्ड ट्रायसायकल प्रदान किया गया।

अवैध कबाड़ पर महासमुंद पुलिस की बड़ी कार्यवाही

जोहार छत्तीसगढ़-महासमुंद।

पुलिस अधीक्षक महासमुन्द भोजराम पटेल द्वारा जिलें के समस्त थाना चौकी प्रभारियों एवं सायबर सेल की टीम को अवैध शराब, जुआध्सट्टा, अवैध कबाड, अवैध पदार्थ व अन्य आपराधिक गतिविधियों पर नजर रखने व कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया था।

इसी तारतम्य् में 18 जुलाई 2022 को मुखबिर से सूचना मिली खरियार रोड ओडिशा से महासमुन्द की ओर एक कबाड़ी गाड़ी आ रही है। उक्त सूचना को गम्भीरता से लेते हुये पुलिस अधीक्षकख द्वारा अवैध कबाड के विरूध्द कार्यवाही करने हेतु सायबर सेल महासमुन्द की टीम एवं थाना कोमाखान पुलिस की टीम निर्देशित किया गया था जिस पर सायबर सेल की टीम एवं थाना कोमाखान की टीम द्वारा उक्त कबाड वाहनों पर निगाह रखी जा थी फॉरेस्ट नाका टेमरी तेज रफ्तार से एक वाहन अशोक लिलेंड क्रमांक सी जी 04 एनएस 0975 आई जिसे रोककर पूछताछ करने पर चालाक अपना नाम बलराम गोंड पिता केसरी कोड उम्र 38 वर्ष धामनडोंगा कांटाभाजी थाना कांटाभाजी ओडिशा निवासी होना बताया वाहन में लोड समानों के बारे में पूछताछ करने पर संतोषप्रद जवाब नही दिया वाहन को चेक करने पर वाहन में लोहे व टीना के समान पूरा भरा हुआ मिला मौके पर उक्त सामानों के परिवहन एवं वाहन के संबध मे अपने कोई खरीदी बिक्री का वैधानिक कागजात नहीं होना बताया गया उपरोक्त लोहे व टीना के कबाड समान चोरी होने के माकुल संदेह होने पर आरोपी बलराम गोंड पिता केसरी कोड उम्र 38 वर्ष सा. धामनडोंगा कांटाभाजी थाना कांटाभाजी ओडिशा के कब्जे से एक वाहन अशोक लिलेंड क्रमांक सी जी 04 एनएस 0975 कीमती करीब दस लाख रूपये एवं वाहन में भरा लोहे व टीना का समान वजनी करीब 6,73,750 रूपये को जप्त कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। यह सम्पूर्ण कार्यवाही पुलिस अधीक्षक महासमुन्द भोजराम पटेल के मार्गदर्शन में अति पुलिस अधीक्षक मेघा टेम्भुरकर साहू एवं अनु.अधिकारी पुलिस बागबाहरा कपिल चन्द्रा अनु.अधिकारी पुलिस महासमुंद कल्पना वर्मा के निर्देशन में थाना कोमाखान प्रभारी निरीक्षक रामअवतार पटेल, सायबर सेल प्रभारी उनि संजय सिंह राजपूत, प्रआर नरेन्द्र साहू, आर. पवन ठाकुर, गणेश्वर ठाकुर, शशि दीवान एवं थाना कोमाखान व सायबर सेल की टीम द्वारा संयुक्त कार्यवाही की गई।

एक नजर

शिविर में दिव्यांगजनों का बना यूडीआईडी कार्ड

299 दिव्यांगजनों का हुआ पंजीयन

राजनांदगांव । आजादी से अंत्योदय तक 75वीं आजादी का अमृत महोत्सव अंतर्गत समाज कल्याण विभाग द्वारा जनपद पंचायत डोंगरगढ़ में दिव्यांगजनों का विशिष्ट पहचान पत्र (यूडीआईडी) शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 299 दिव्यांगजनों का पंजीयन किया गया। शिविर में जिला मेडिकल बोर्ड के हड्डी रोग विशेषज्ञ, नाक कान गला रोग विशेषज्ञ, नेत्र रोग विशेषज्ञ, शिशु रोग विशेषज्ञ सहित अन्य विशेषज्ञ द्वारा दिव्यांगजनों का चिकित्सा प्रमाण पत्र जारी किया गया। आगामी दिव्यांगजनों का विशिष्ट पहचान पत्र (यूडीआईडी) शिविर का आयोजन 20 जुलाई 2022 को जनपद पंचायत खैरागढ़ के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में किया जाएगा। शिविर में 40 प्रतिशत या उससे अधिक के दिव्यांगजन जिनका ऑनलाईन चिकित्सा प्रमाण पत्र एवं यूडीआईडी कार्ड नहीं बना है, वे शिविर में उपस्थित होकर जिला मेडिकल बोर्ड से विशिष्ट पहचान पत्र (यूडीआईडी) बनवा सकते है।

जतमई वाटरफॉल में डूबे युवक का 16 घंटे बाद मिला शव, तालेशर से पिकनिक मनाने आए थे 4 दोस्त

गरियाबंद । जतमाई स्थित वाटरफॉल में नाबालिग युवक का शव पिछले 16 घंटे से लापता था जिसे पुलिस विभाग की रेस्क्यू टीम द्वारा सोमवार को बरामद किया गया,लड़के का नाम तूफ़न है, जो थाना छुरा के तालेशर गाँव का रहने वाला था,मृत युवक तूफ़न अपने तीन साथियों के साथ के साथ पिकनिक मनाने आया था. इस दौरान रविवार वाटरफॉल में नहाते हुए पत्थर में पैर फँस जाने से पानी में डूब वह गया था।गरियाबंद जिले का प्रसिद्ध जतमाई धाम जहा राज्य भर से सैकड़ो श्रद्धालू दर्शन के लिए आते है उसके नीचे पानी से भरा दहरा है जहां कई फिट पानी भरा हुआ है ,वही उस दहरेके बरसात की वजह से और ज्यादा पानी भर गया है रविवार को 4 युवक पिकनिक मनाने के लिए जतमाइ वाटरफॉल पहुंचे थे. इस दौरान नहाते हुए कुंड के नीचे पत्थरों के बीच पैर फँस जाने से लड़का पानी में डूब गया था, जिसके बाद से रविवार को नगर सेना की रेस्क्यू टीम लगातार उसकी खोज में लगी थी जिसे सोमवार को सुबह बारिश रुकने और झरने में पानी कम होने के बाद खोजबिन के दौरान घटनास्थल में कुंड के बीच तूफ़न की लाश पत्थरों के बीच देखी गई.जिसे रेस्क्यू टीम ने रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ाया।नगर सेना प्रमुख दीपाँकुरनाथ ने बतलाया पुलिस द्वारा लाश बरामद कर पंचनामा कर शव को पोस्टमार्टम हेतु गरियाबंद भेजा जाएगा. फ्लिहाल पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है. इससे पहले रविवार को युवक के डूबने की जानकारी मिलने के बाद जिला प्रशासन को नगर सेना की रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंच सर्च ऑपरेशन शुरू किया गया था. हालांकि रविवार रात से लगातार बारिश होने की वजह से रेस्क्यू ऑपरेशन में भी बाधा आ रही है, लेकिन फिर भी नगर सेना की रेस्क्यू टीम पूरी तरह से मुस्तैदी से लगी हुई थी और शव को 16 घंटे के भीतर निकाल पाए।

अधिकारी लंबित आवेदनों का निराकरण शीघ्र करें - कलेक्टर

गरियाबंद । कलेक्टर प्रभात मलिक ने आज अधिकारियों की बैठक में लंबित समय-सीमा प्रकरणों की विभागवार समीक्षा की और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि 31 दिसम्बर 2021 के लंबित प्रकरणों को विभागीय अधिकारी आगामी समय-सीमा बैठक के पहले निराकृत करना सुनिश्चित करें। इसी प्रकार मार्च 2022 तक के लंबित प्रकरण भी निपटाने आवश्यक पहल किया जाये। बैठक में जिले के प्रभारी मंत्री की समीक्षा बैठक को ध्यान में रखते हुए विभागवार एजेण्डा की समीक्षा की गई। कलेक्टर ने आगामी समय-सीमा प्रकरणों की समीक्षा हेतु विभागवार तैयार एजेण्डा से अधिकारियों को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि आगामी 11 से 17 अगस्त स्वतंत्रता सप्ताह के दौरान आयोजित हर घर झण्डा कार्यक्रम के सफ्ल क्रियान्वयन हेतु जिला मुख्यालय,विकासखंड मुख्यालय व ग्राम पंचायत के शासकीय भवनों में झंडा कोड को ध्यान में रखते हुए झंडा फहराया जाना है। अधिकारियों द्वारा नगरीय निकायों एवं ग्रामों में भी जनप्रतिनिधियों के माध्यम से लोगों को अपने घर में झंडा फहराने प्रोत्साहित किया जाये।बैठक में बताया गया कि लोगों की विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु आगामी 22 जुलाई को विकासखंड मुख्यालय मैनपुर और 23 जुलाई को विकासखंड मुख्यालय देवभोग में जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जायेगा। समस्त विभाग के अधिकारियों को विभागीय तैयारियों के साथ उक्त शिविर में उपस्थिति सुनिश्चित करने कहा गया है।

प्रशिक्षु अधिकारियों का अध्ययन भ्रमण कार्यक्रम 21 को

कांकेर । छत्तीसगढ़ प्रशासन अकादमी निमोरा रायपुर में 16 डिप्टी कलेक्टर्स परिचायत्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणरत है। वे 18 से 24 जुलाई तक प्रदेश के विभिन्न जिलों का भ्रमण करेंगे। इसी कड़ी में कांकेर जिले में 21 जुलाई को प्रात: 08 बजे से जंगलवार फेयर कॉलेज का भ्रमण करेंगे, तत्पश्चात कोण्डागांव के लिए प्रस्थान करेंगे।

नदी का जलस्तर बढ़ने से किनारे बसे गांव के खेतों में भरा पानी, फसल और घरों को लेकर किसान चिंतित

ग्राम बहेरा और खमहरिया के किसानों ने किसान नेता योगेश तिवारी से मुलाकात कर परेशानी से कराया अवगत

जोहार छत्तीसगढ़-बेमेतरा।

विधानसभा में शिवनाथ और खारुन नदी किनारे बसे गांवो में बाढ़ जैसी स्थिति बनी हुई है। लगातार हो रही बारिश के कारण नदी के किनारे बसे गांव के खेतों में पानी भरने से किसानों को खासा नुकसान पहुंचा है।

वही गांवो में कच्चे मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं। इस सम्बंध में किसान नेता योगेश तिवारी से ग्राम बहिंगा के किसान मिलने पहुंचे। किसानों ने किसान नेता को बताया कि सरकार के निर्देश पर स्थानीय प्रशासन की ओर से सर्वे के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति की जाती है। पिछले साल हुए सर्वे में किसानों के नुकसान के आकलन के बाद भी आज तक क्षतिपूर्ति राशि किसानों को नहीं मिली है।

प्रशासन से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने से किसानों में नाराजगी

किसान नेता ने कहा कि सरकार सर्वे कराती हैं। रिपोर्ट बनाती है मगर बाद में रिपोर्ट को डस्टबीन में डाल दिया जाता है। सप्ताह भर से लगातार हो रही से शिवनाथ और खारुन का जलस्तर बढ़ रहा है। वहीं गंगरेल बांध के 14 गेट खोले जाने से किसान चिंतित हैं। किसानों को अपनी फसल और घर की चिंता सताने लगी है। प्रशासन से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने से किसानों में खासी नाराजगी है। ग्राम बहिंगा के साहू पारा और गौरव चौक में 3 से 4 फिर तक पानी भर गया है।

प्रभावित किसान, जिन्हें बीते साल हुई क्षति का आज तक नहीं मिला मुआवजा

बीते साल नन्दु निषाद, महेतरु ध्रुव, बुधराम निषाद, पिरतेशवर सिंह राजपुत, डेरहा निषाद, रामचंद्र ध्रुव,खमहरिया के किसान बिन्दा यादव,राजेश निषाद,संतोष साहू, ऐलाराम निषाद सहित सैकड़ों किसान प्रभावित हुए। जिनको तक मुआवजा नही मिला है। किसानों ने बताया कि क्षतिपूर्ति को लेकर संबंधित कार्यालयों के चक्कर काटते रहे लेकिन अधिकारी संतोषजनक जवाब देने की स्थिति में नहीं है। नतीजतन आज तक मुआवजा नहीं मिला है।

एक नजर

किसान 31 जुलाई तक करा सकेंगे खरीफ फसलों का बीमा

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुर।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसान अब अपनी खरीफ फसलों का बीमा 31 जुलाई तक करा सकेंगे। पूर्व में जारी निर्देश के तहत बीमा कराने की अंतिम तिथि 15 जुलाई तक थीए जिसे अब बढ़ाकर 31 जुलाई कर दिया गया है। राज्य में खरीफ 2022 के तहत धान सिंचितए धान असिंचित, मक्का, सोयाबीन, मूंगफ्ली, मूंगए उड़द एवं तुअर ;अरहर फसल का बीमा कृषक करा सकते है। अऋणी कृषक जो भू-धारक व बटाईदार हो योजना में सम्मिलित हो सकते है। इस योजना अंतर्गत प्रावधानित जोखिम बाधिक रोपाई, स्थानीय आपदाएंए फसल कटाई उपरांत होने वाली क्षति तथा फसलवार पैदावार के आधार पर व्यापक क्षति अंतर्गत फसल क्षति हेतु दावा राशि का भुगतान प्रावधानानुसार किया जाता है। अधिसूचित फसल को बीमित कराने हेतु इच्छुक कृषक फसल बीमा हेतु 31 जुलाई 2022 तक नजदीकी बैंक या लोक सेवा केन्द्रों या बीमा कंपनी अथवा ग्रामीण पोस्ट ऑफिस में संपर्क कर अपने फसल को बीमित करा सकते है।

फसलों को मवेशियों से बचाने गौठानों में सतत रोका छेका कार्यक्रम का किया जा रहा आयोजन

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुर।

कलेक्टर रितेश अग्रवाल के मार्गदर्शन में खरीफ फसलों की सुरक्षा हेतु जिले में रोका-छेका अभियान की शुरूआत की गई है। इस दौरान फसल को चराई से बचाने हेतु पशुओं को नियमित रूप से गौठान में लाने हेतु सभी ग्राम पंचायतों में मुनादी कराई जा रही है। जिससे किसानों के फसलों की सुरक्षा हो सके। पशु चिकित्सा विभाग के उप संचालक ने बताया कि रोका छेका अभियान के दौरान जिले के गौठानों में पशु चिकित्सा शिविर आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में जिले के भेलवाडीह, बासाझाल, बनकम्बो गौठान में शिविर का आयोजन कर पशुओं के स्वास्थ्य की जांचए पशु नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान कार्य, टीकाकरण करने के साथ ही किसानों को निःशुल्क दवाईयां का भी वितरण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि रोका छेका अभियान के दौरान किसानों को विभिन्न शासकीय योजनाओं के संबंध में भी जानकारी प्रदान कर योजना का लाभ उठाने हेतु आग्रह किया जा रहा है। जिससे वे शासकीय योजनाओं का लाभ उठाकर अपने आर्थिक स्थिति और अधिक मजबूत कर सके।

जल योद्धा अयप्पा द्वारा जल संरक्षण हेतु विविध स्थानों का क्षेत्र भ्रमण कर अधिकारी कर्मचारियों को फील्ड प्रशिक्षण किया गया प्रदान

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुर।

कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में जल योद्धा व विशेषज्ञ वाटर रिचार्ज अयप्पा मसाजी द्वारा जल सरंक्षण एवं भूमिगत जल स्त्रोत स्तर बढ़ाने हेतु वर्षा जल संचयन के सम्बंध में जशपुर के किनकेलए बालाछापर, छोटा बनई सहित अन्य स्थानों का क्षेत्र भ्रमण कर फील्ड प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस दौरान अयप्पा द्वारा जल संरक्षण हेतु अपना, जाने वाले विविध तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी भी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में जशपुरए मनोरा एवं दुलदुला के तकनीकी सहायक एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

ज्ञानोदय कॉलेज ऑफ एजुकेशन में वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान चलाया गया

जोहार छत्तीसगढ़-जांजगीर।

ज्ञानोदय शिक्षा महाविद्यालय जांजगीर में स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत थीम पर आधारित वृक्षारोपण एवं स्वच्छता कार्यक्रम संपन्न कराया गया। जिसमें छात्र एवं छात्रायापिकाओं ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। वृक्ष जीवन का आधार है, वृक्षारोपण से ही पर्यावरण को बचाया जा सकता है। इसी को आधार मान कर समस्त छात्र और छात्राओं ने महाविद्यालय प्राँगढ़ में विभिन्न प्रकार के सब्जी, औषधीय एवं फूलो के पौधे लगाये। उन्होंने निरंतर पौधों की देखभाल करने का संकल्प भी लिया। प्राँगढ़ से प्लास्टिक एवं अन्य कचरे को साफ किया जिसका निरीक्षण महाविद्यालय के संचालक डॉ. सुरेश यादव एवं समस्त प्राध्यापकगण डॉ. हेमा तिवारी, चंचला मिश्रा, पूजा गुप्ता व अमित कुमार उपाध्याय के द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्राध्यापकों ने वृक्षारोपण एवं स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डाला।

वकील के खेत से दूसरी बार हुए सबमर्सिबल पंप की चोरी, थाने में शिकायत दर्ज

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

धरमजयगढ़ क्षेत्र में चोरी की घटना दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। जिसमें ट्यूबवेल चोरी के ज्यादा मामले हैं। खेती के दिनों में किसान के खेत से ट्यूबवेल की चोरी होना दुःख का पहाड़ टूटने जैसा है। 17 जुलाई की रात को भी शाहपुर कालोनी के एक खेत में लगे ट्यूबवेल पंप, केबल की चोरी हुई है। जिसकी शिकायत धरमजयगढ़ थाने में की गई है। पेशे से अधिवक्ता सुकुमार सरदार शाहपुर कालोनी निवासी ने धरमजयगढ़ थाने में शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि वह 18 जुलाई की सुबह अपने खेत में गया। जहां देखा कि वहां पर लगे सबमर्सिबल पंप एवं केबल को कोई अज्ञात व्यक्ति ले गया है। पूर्व में भी सुकुमार ने सबमर्सिबल पंप की चोरी पर शिकायत दर्ज कराई थी। पंप की चोरी होने से किसान को बहुत परेशानी हो रही है। आवेदन में अज्ञात चोर के खिलाफ कार्यवाही करते हुए आवेदक को क्षतिपूर्ति दिलाने की मांग की गई है। पुलिस ने शिकायत पर अज्ञात आरोपी के खिलाफ धारा 379 के तहत मामला दर्ज कर ली है।

आवश्यकता है

		पद
1. समाचार रिपोर्टर	-	3
2. कम्प्यूटर आपरेटर	-	1
3. ऑफिस कार्य के लिए	-	3

वेतन योग्यतानुसार

इच्छुक युवक/युवति अपना बायोडाटा के साथ संपर्क करें।

दैनिक जोहार छत्तीसगढ़

कार्यालय धरमजयगढ़

मो, 9479177711, 7489419194 ,7879121221

साफकरने के बहाने सोने का कंगन लेकर भागे ठग

जांजगीर चांपा । जिले के सक्ती में ठगों ने कंगन साफकरने के बहाने महिला को झांसे में लेकर सोने के कंगन ही पार कर दिये। कंगन की कीमत करीब सवा लाख रुपये बताई जा रही है। शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफमामला दर्ज कर जांच में लिया है। वहीं आरोपियों की तस्वीरे आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। मिली जानकारी के अनुसार सोमवार सुबह सक्ती के वरिष्ठ अधिवक्ता नरेश सेवक कोर्ट गए हुए थे और उनकी पत्नी घर मे अकेली थी। इसी दौरान दो युवक बाइक में सवार होकर आए और अधिवक्ता नरेश सेवक की पत्नी से घर के पीतल के समान साफ कराने को लेकर पूछा। जिस पर उन्होंने मना कर दिया। कुछ देर बाद फिर से ठग उनके घर आ पहुंचे, जिसके बाद वकील की पत्नी ने पीतल के एक लोटे को उनको साफ करने दिए। इस दौरान ठग की नजर वकील की पत्नी के हाथों के कंगन पर गई। उसके बाद उन्होंने झांसे में लेकर कंगन उसके हाथों से उतरवा लिए और उसे साफकरने लगे। इसी दौरान एक दूसरा ठग उनसे कागज में दस्तख्त करने के बहाने उनका ध्यान अपनी ओर खींच लिया और चंद सेकेंड में ठग करीब ढाई तोले सोने के कंगन लेकर वहां से भाग निकले।

सट्टा पट्टी के साथ युवक गिरफ्तार, नगदी भी जप्त

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

पुलिस अधीक्षक रायगढ़ अभिषेक मीणा के निर्देशानुसार एसडीओपी दीपक मिश्रा के मार्गदर्शन में धरमजयगढ़ पुलिस सट्टा खेलाने वालों पर लगातार कार्यवाही कर रही है। 18 जुलाई को भी सट्टी पट्टी से लोगों को जुआ खेला रहे एक युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मामला धरमजयगढ़ थानांतर्गत धरमजयगढ़ कालोनी का है। धरमजयगढ़ पुलिस के अनुसार मुखबिर से सूचना मिली कि धरमजयगढ़ कालोनी में एक युवक सट्टी पट्टी से जुआ खेला रहा है। सूचना पर पुलिस ने कालोनी में सट्टा खेलाने वाले युवक आकाश दास पिता आंनद दास उम्र 26 वर्ष के यहां दबिश दी। जहां पुलिस ने सट्टा पट्टी के साथ युवक को पकड़ा। आरोपी युवक के पास से 6 सौ दस रुपए नगदी एवं 50 हजार रुपए का सट्टा पट्टी लिखा कागज जब्त किया है। पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ सार्वजनिक द्युत अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है।

कलेक्टर ने ली राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक

गरियाबंद । कलेक्टर प्रभात मलिक ने आज राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक में राजस्व प्रकरणों की अनुविभाग एवं तहसीलवार समीक्षा की। इस अवसर पर कलेक्टर ने कहा कि राजस्व न्यायालय में तत्काल निर्यण हो, सुनिश्चित किया जायेराजस्व प्रकरण लंबित न रखे अधिकारी अपनी जिम्मेदारी भलि-भांति निर्वहन करें। राजस्व संहिता की धारा और नियम राजस्व अधिकारी को मौखिक मालूम होना चाहिए।उन्होंने कहा कि बेहतर कार्य के लिए अधिकारी कार्यालयीन व्यवस्था भी सुव्यवस्थित रखना सुनिश्चित करें।

सिमरन ने किया कुछ ऐसा कि कलेक्टर ने दिया इनाम और बजवाई ताली

जोहार छत्तीसगढ़-जांजगीर।

दोपहर का समय था कलेक्टर तारण प्रकाश सिन्हा मुख्यालय से दूर जैजैपुर ब्लॉक में जगह जगह दौरे कर रहे थे। एक कार्यालय का निरीक्षण कर वह अपनी कार से सवार होकर निकल ही पड़े थे कि अचानक उन्हें स्कूल की छात्राएं सड़क पर समूह बनाकर खड़ी हुई दिख गई। कलेक्टर ने अपनी कार रुकवाई और बाहर निकल गए। वे पैदल चलने लगे। कार के ड्राइवर से लेकर उनके गनमैन तक को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर हुआ क्या? कलेक्टर साहब किधर चले जा रहे हैं। सभी उनके पीछे चलने लगे। आखिरकार जब कलेक्टर छात्राओं के पास पहुंचे तो सबको समझ आया कि वे उनकी समस्याओं को जानने पहुंचे हैं।

यहाँ पहुंचते ही कलेक्टर सिन्हा ने छात्राओं से पूछा कि आप सभी यहां क्यों घूम रहे क्लास क्यों अटैंड नहीं कर रहे? कलेक्टर के इन सवालों के साथ अनेक छात्रा जैसे घबरा सी गई। इतने में कलेक्टर सिन्हा ने उनसे बहुत ही स्नेहपूर्वक बात करना शुरू कर दिया। कलेक्टर ने उनकी पढ़ाई के बारे में पूछा। उन्होंने 12 के बाद आगे क्या पढ़ना है यह भी छात्राओं को बताया। इसी बीच कुछ छोटी बच्चियां भी स्कूल ड्रेस में उन्हें दिखी तो कलेक्टर ने उन्हें तत्काल अपने पास बुलाया। यह बच्चियां संकोचवश कुछ बोल भी नहीं पा रही थी। जब कलेक्टर ने उनका उत्साहवर्धन किया तो उसने अपना नाम बताया। अपना नाम सिमरन लहरे बताते ही कलेक्टर ने उनसे 7 का पहाड़ा पूछा। वह बच्ची बोलने से घबरा रही थी तो कलेक्टर ने उन्हें अपना पेन दिखाते हुए कहा कि आप पहाड़ा पढ़ोगे तो मैं आपको इनाम दूंगा। कलेक्टर से इनाम की बात सुनते ही सिमरन ने बिना रुके पहाड़ा पढ़ दिया। सिमरन के पहाड़ा पढ़ते ही आखिरकार कलेक्टर ने अपना वादा निभाया और जेब से पेन निकाल कर न सिर्फ बच्ची को दे दिया, अपितु आसपास इकट्ठी हुई भीड़ से तालियां भी बजवाई। कलेक्टर के हाथों पेन पाकर खुश सिमरन जब उनका पैर छूने लगी तो कलेक्टर ने उन्हें रोकते हुए कहा कि नहीं, नहीं ये ठीक नहीं। आप अच्छे से पढ़ाई करना। बड़ी होकर कलेक्टर बनना। उन्होंने सभी छात्राओं से कहा कि आप अच्छे से पढ़ाई करोगे तो आपको अच्छी नौकरी मिलेगी। राज्य शासन द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए शुल्क भी माफ कर दिया है और शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने अनेक योजनाएं भी संचालित कर रही है। आप सभी इसका लाभ उठाइए। कुछ छात्राओं ने शिक्षकों की कमी के विषय में कलेक्टर को बताया तो उन्होंने तत्काल ही इस समस्या को दूर करने की बात कही। कार्यालय आते ही कलेक्टर ने विकासखण्ड के शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि स्कूल समय में कोई भी विद्यार्थी सड़क में नहीं दिखनी चाहिए। आप शिक्षकों की व्यवस्था कर नियमित अध्यापन कराए। उनकी पहली प्राथमिकता है कि स्कूल आने से कोई वंचित न हो और स्कूल आकर कोई ज्ञान से वंचित न रहे। कलेक्टर को देखकर आसपास के कुछ लोग भी यहां आए हुए थे। उन्होंने कलेक्टर को देखते ही अपने क्षेत्र की समस्या को सामने रखा। लोगों ने बताया कि ग्राम जुनवानी की सड़क उखड़ चुकी है।

आंदोलन से पूर्व कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन ने की बैठक

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

आगामी आंदोलन की तैयारी के लिए कर्मचारी-अधिकारी फेडरेशन के नेतृत्व में शासकीय कॉलेज में बैठक संपन्न हुई। जिसमें 25 जुलाई से 29 जुलाई तक के 5 दिवसीय आंदोलन कि रूपरेखा तैयार की गई। जिसमें निर्णय लिया गया कि सभी विभाग का आंदोलन में भागीदारी एवं 1 प्रति आवेदन 22 जुलाई से पूर्व अपने विभाग को सूचना एवं 1 प्रति ब्लॉक संयोजक को सूचना, आर्थिक सहयोग पर चर्चा हुआ, अंतिम एवं आगामी बैठक 20 जुलाई को पुनः आयोजित किया जाना तय हुआ,आगामी बैठक में अंतिम निर्णय कर आंदोलन की कार्य योजना को अंतिम रूप दिया जाना तय हुआ है। साथ ही आगामी 20 जुलाई के बैठक में सभी विभाग के संगठन प्रमुख की उपस्थिति पर चर्चा हुआ,ताकि सभी विभाग के उपस्थिति में कार्ययोजना बन सके। बता दें कि महंगाई भत्ता एवं केंद्र के समान मकान किराया भत्ता देने की मांग को लेकर चरणबद्ध तरीके से फेडरेशन आंदोलन कर रही है। फेडरेशन द्वारा पूर्व में एकदिवसीय कलमबंद कर आंदोलन किया गया था।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक नारायण बाईन, द्वारा आसमा पब्लिसर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित कर मेडरमार कालोनी, जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक -**नारायण बाईन,** फोन -फैक्स 07766299001, मो, 9479177711, 7489419194 Email-joharchhattisgarh@gmail.com, joharchhattisgarh@yahoo.co.in